चन्दामामा
अप्रैल १९६९
75 P

Chandamama Press
VADAPALANI
MADRAS-26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others...

जीवन यात्रा के
पथ पर शक्ति की
आवश्यकता है...

चन्दामामा

अप्रैल १९६९

पीएनबी
उज्जवल
भविष्य की
गारंटी देता है
PR-PNB-6810HI-1

पालन पोषण सही कीजिए ;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए !
बढ़ने और पढ़ने वाले बच्चों के लिए हर दिन के भोजन से मिलने वाली शक्ति काफ़ी नहीं होती। वे जितनी शक्ति रोज़ प्राप्त करते हैं उतनी पढ़ने और खेलकूद में खर्च कर डालते हैं। बच्चों में बराबर शक्ति बनाए रखने के लिए उन्हें हर दिन बोर्नविटा देना चाहिए। बोर्नविटा से बच्चे स्वस्थ तथा उत्साह पूर्ण रहते हैं।
स्वादिष्ट और पौष्टिक बोर्नविटा कोको, दूध, माल्ट और शक्कर का सन्तुलित मिश्रण है।
शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए— कॅडबरिज़ बोर्नविटा !
Cadbury's
Bournvita
the ideal food drink for strength and vigour
450g
Bensons-0391 Hin

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
पच्चीस वर्षों तक लगातार राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्वकर महात्मा गांधीजी ने भारत का नाम सारे संसार में फैलाया। आज वे जीवित होते तो सौ वर्ष के होते। गांधीजी ने इतने विशाल देश को स्वातंत्र्य के युद्ध के लिए तैयार किया और इस युद्ध को अहिंसा, सत्य व धर्म के आधार पर चलाया। ऐसे महात्मा विश्व के इतिहास में दूसरे कोई नहीं दिखायी देते। उनकी जीवनी को चन्दमामा के इस अंक से क्रमशः प्रस्तुत कर रहे हैं।
वर्ष: २० अप्रैल १९६९ अंक: ८

बंटवारा

एक गरीब किसान के दो बेटे थे। बचपन में ही उनकी माँ मर गयी। कुछ समय बाद उनका पिता भी मर गया। उनका पिता अपने लड़कों के लिए जायदाद के नाम पर केवल एक गाय, एक नारियल का पेड़ और एक रजाई छोड़ गया।

बड़ा बेटा कुटिल स्वभाव का था और दूसरा भोला भाला था। इसलिए बड़े बेटे ने अपने छोटे भाई से कहा—"भैया, हम अपनी जायदाद आपस में बांट लेंगे। लेकिन बांटते वक़्त हमें यह देखना है कि वह नष्ट न हो जाय। तुम मानते हो न? देखो, हर चीज़ के दो दो टुकड़े कर दे तो हमारा ही नुक़सान होगा। इसी तरह नारियल के पेड़ को दो टुकड़ों में बांटा जाय या रजाई के दो टुकड़े कर दे तो वे किसी काम के नहीं रह जायेंगे। इसलिए मैं ऐसा उपाय बताऊँगा जिससे हमारी जायदाद का कोई नुक़सान न हो। मान लो, हमारी गाय है! उसके आगे का हिस्सा तुम लो और पीछे का हिस्सा मैं लेता हूँ। इसी तरह नारियल के पेड़ का नीचे का हिस्सा तुम्हारा है और ऊपर का हिस्सा मेरा। अब रजाई रह गयी। दिन के वक़्त रजाई का इस्तेमाल तुम करो और रात के समय मैं उसका उपयोग करूँगा। ऐसा करने से दोनों में किसी की शिकायत न होगी।" भोले भाई ने अपने बड़े भाई की मीठी मीठी बातों में आकर इस बंटवारे को मान लिया।

बंटवारे की शर्त के मुताबिक़ छोटा भाई रोज़ गाय को चराता और उसके आगे का हिस्सा धोता। बड़ा भाई गाय का दूध दुहकर अकेले पी जाता। छोटा भाई रोज़ नारियल के पेड़ को सींचता और बड़ा भाई नारियल तोड़कर खा लेता।

संजय कुमार

छोटे भाई को दिन के वक़्त रजाई की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसलिए वह उसे धूप में सुखाता? खूब झाड़-पोंछकर तहें करके रख देता; रात के वक़्त बड़ा भाई उसे ओढ़कर सर्दी से अपने को बचाता।

बड़ा भाई छोटे भाई के प्रति यह जो अन्याय कर रहा था, उसका पता गाँव के एक बूढ़े ने लगाया। एक दिन बड़े को घर में न पाकर बूढ़ा छोटे के पास आया और बोला—"बेटा, तुम रोज़ गाय चराते हो, गाय मोटी भी हो गयी; अच्छा दूध देती है न? तुम भी दूध पीते हो न? नारियल के पेड़ को रोज़ पानी से सींचते हो; नारियल भी ख़ूब लग गये हैं! क्या तुम भी खाते हो? रोज़ रजाई को सुखा कर, झाड़कर तहें बनाते हो। क्या रात के वक़्त उसे ओढ़कर अपने बदन को गरम भी करते हो?"

"नहीं जी, गाय के आगे का हिस्सा ही मेरा है। पीछे का हिस्सा बड़े भाई का है। नारियल का नीचे का हिस्सा मेरा है, ऊपर का बड़े भैया का है। रजाई दिन के वक़्त मेरी है और रात के वक़्त भैया की है।" छोटे ने कहा।

"बेटा, तुम भोले हो। तुम्हारे बड़े भाई ने तुम्हें धोखा दिया है। मेरे कहे
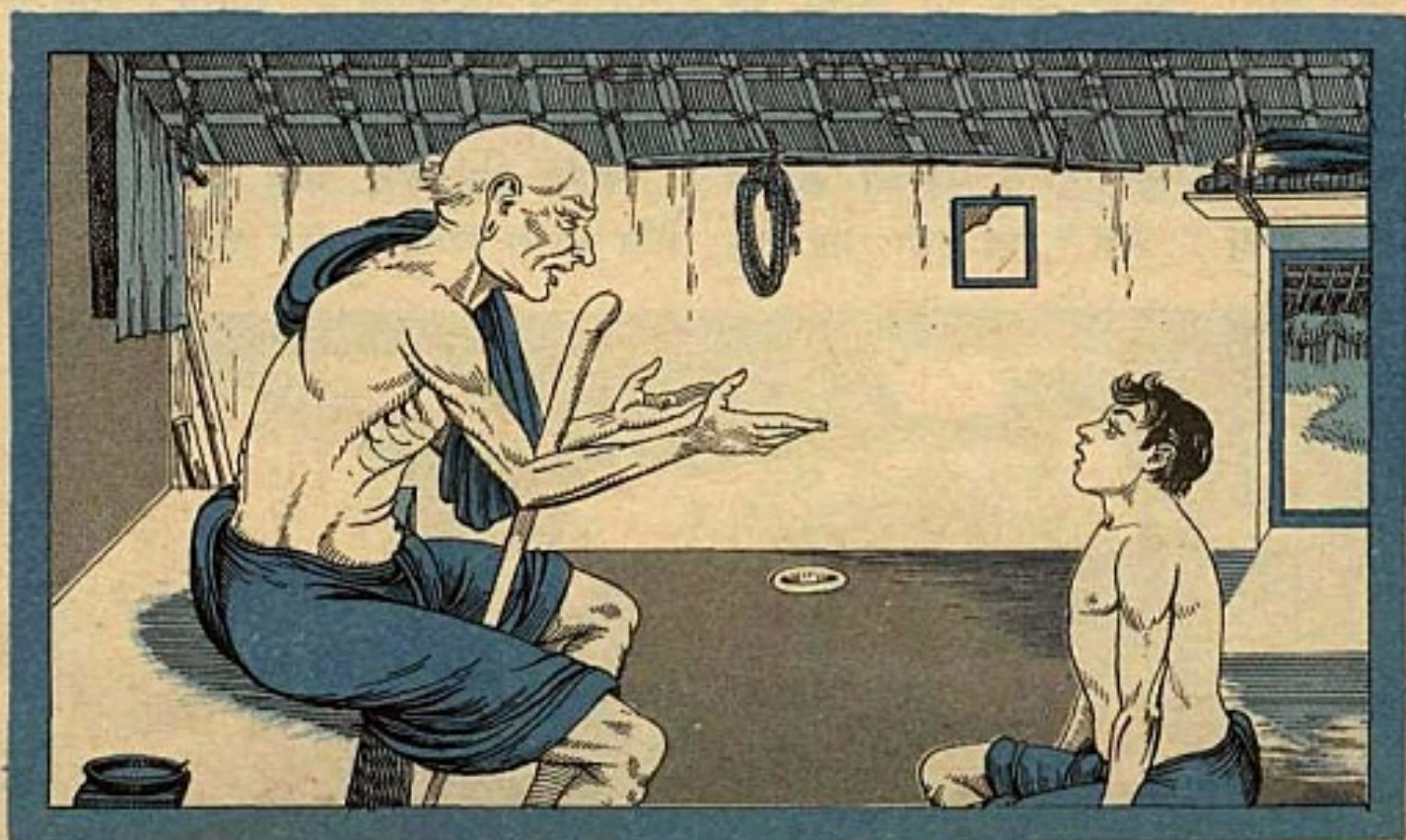
अनुसार करोगे तो उसकी अक्ल ठिकाने लग जायगी और तुम्हारे साथ न्याय करेगा।" बूढ़े ने समझाया। बूढ़े ने छोटे को आगे क्या क्या करना है, समझा दिया और चला गया।

दूसरे दिन बड़ा भाई जब गाय दुहने आया तब छोटे ने गाय के मुँह पर लाठी दे मारा। "अरे, यह तुम क्या करते हो?" बड़े ने पूछा।

"गाय के आगे का हिस्सा मेरा है। मैं चाहे जैसा भी करूँगा। तुम्हें इससे क्या मतलब है?" छोटे ने कहा।

बड़े ने समझ लिया कि किसी ने छोटे को सिखाया है। इसलिए कहा–"भैया, गाय को न मारो, तुम्हें भी आधा दूध दूँगा।" इसके थोड़ी देर बाद बड़ा भाई नारियल तोड़ने पेड़ पर चढ़ गया। उस वक़्त छोटे ने कुल्हाड़ी से पेड़ को काटना शुरू किया। बड़े ने जब पूछा, यह तुम क्या करते हो, छोटे ने कहा–"यह मेरा हिस्सा है, चाहे मैं जो भी कर सकता हूँ। पूछनेवाले तुम कौन होते हो?"

जब तक बड़े ने यह नहीं कहा कि आधे नारियल दूँगा, तब तक छोटा पेड़ को काटता रहा। उस रात को रजाई ओढ़ने के ख्याल से बड़े ने रजाई निकाली तो, वह भीगी हुई थी।

"अरे, रजाई को क्यों भिगो दिया? कैसे ओढ़े?" बड़े ने छोटे से पूछा।

"मेरी भी यही हालत थी, दिन में ओढ़ी तो गरम थी, उसे ठण्डा करने पानी में भिगोया।" छोटे ने जवाब दिया।

"अरे, कोई रजाई को भिगोता है! भिगोने से वह ख़राब हो जायगी। रात के वक़्त दोनों उसके नीचे सोयेंगे, न भिगोओ।" बड़े ने कहा।

इसके बाद बड़ा भाई छोटे भाई के प्रति अच्छा व्यवहार करने लगा।

मखमल की टोपी

सिंहल देश में एक ग़रीब आदमी था।

उसे एक बछड़ा दान में मिला। ग़रीब आदमी उसे बेचने एक जंगल के रास्ते से ले जा रहा था। तीन डाकुओं ने उसे रोककर पूछा—"अबे, जा कहाँ रहे हो?"

"इस बछड़े को बेचने जाता हूँ।" ग़रीब ने कहा। "अरे, यह तो बकरा है, बछड़ा कहते हो। तुम भी कैसे इसे तुम बेवकूफ़ हो?" डाकुओं ने पूछा।

"यह बकरा नहीं, बछड़ा ही है। अभी इसकी उम्र ही क्या है?" गरीब ने कहा।

"अरे भोले आदमी! तुम हमारा मज़ाक उड़ाते हो? तुम समझते हो कि हम यह भी नहीं जानते, बछड़ा कौन है और बकरा कौन? इसे और कहीं बेचने क्यों ले जाते हो? तीन रुपये देंगे, हमारे हाथ ही बेच दो।" डाकुओं ने कहा।

गरीब ने सोचा कि ये लोग लुटेरे हैं, बदमाश हैं, न देने पर उसे मार भी सकते हैं, वह अकेला कुछ नहीं कर सकेगा। यह सोचकर वह गरीब आदमी बछड़े को चार रुपये में बेचने तैयार हो गया। वे चार रुपये देकर आगे बढ़ने लगे।

"चोरों ने मेरे साथ धोखा दिया। इसका बदला लेना चाहिए।" यह सोचकर गरीब आदमी उनके पीछे दौड़ता गया और बोला—"मैं अनाथ हूँ! मेरे कोई नहीं है। मुझे भी तुम लोग अपने साथ रहने दो। तुम लोग जो भी कहोगे, वह सारा काम करता रहूँगा।"

चोरों ने गरीब की बात मान ली। उसे अपने दल में मिला लिया। उसको अपने दल में मिलाने के कारण उनको चिंता करने की ज़रूरत न पड़ी। क्योंकि वह उनकी खूब सेवा करता था।

कुमारी पूनम

कुछ दिन बीत गये। एक दिन गरीब आदमी अपने सर पर मखमल की टोपी पहने डाकुओं के पास आया। उस टोपी को देख तीनों चोर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

"इस टोपी की करामात जानते तो तुम लोग शायद नहीं हँसते।" गरीब ने कहा।

"अरे, तुम्हीं बताओ न, उसकी करामात कैसी?" डाकुओं ने पूछा।

"इस टोपी को पहन कर मैं जहाँ भी जाता हूँ, तो मुझे भर पेट खाना और आदर मिलता है। मेरी ज़िंदगी को राजसी ठाठ के साथ काटने के लिए यह टोपी पर्याप्त है।" गरीब ने कहा।

"अरे, तुम्हारी बातों पर कौन यक़ीन करेगा? उसकी महिमा साबित कर दो तो?" डाकुओं ने गरीब आदमी से पूछा।

"कल ही तुम लोग इसके प्रभाव को देख सकते हो।" गरीब ने डींग मारी। उस रात को ही गरीब उस गाँव की दो सरायों में गया, उन सरायों के मालिकों के हाथ काफ़ी रुपये देकर समझाया कि वह अपने मित्रों के साथ जब खाने के लिए आयगा तब उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

दूसरे दिन वह गरीब आदमी अपने तीनों मित्रों को साथ लेकर एक सराय के भोजनालय में पहुँचा। सराय का मालिक उनके पास दौड़ा आया और बोला– "पधारिये, आइये।" इसके बाद आदर के साथ उनको भोजनालय में ले गया।

"मेरे और मेरे मित्रों के लिए बढ़िया भोजन चाहिए।" गरीब ने आदेश दिया।

भोजनालय के मालिक ने चारों को बढ़िया भोजन खिलाया और जब वे सब लौटने लगे तब विनय से बोला–"आप रोज़ यहाँ पधारा कीजियेगा!" यह आदर देख तीनों चोर अचरज में आ गये। पैसे लेकर भोजन खिलानेवाला आदमी रुपये पूछे बिना फिर रोज़ खाने के लिए बुलाता है। यह ज़रूर इस मखमली टोपी की महिमा होगी।

उस दिन शाम को वह गरीब आदमी अपने तीनों मित्रों को एक दूसरी सराय में ले गया। वहाँ पर भी उनके साथ ऐसी ही इज्ज़त हुई। भोजनालय का मालिक उनको विदा करते गरीब आदमी से बोला– "आप जब तब आकर भोजन नहीं करेंगे तो मुझे बड़ा दुख होगा!"

चोरों के मन में अब मखमली टोपी की महिमा पर ज़रा भी संदेह नहीं रहा। वह
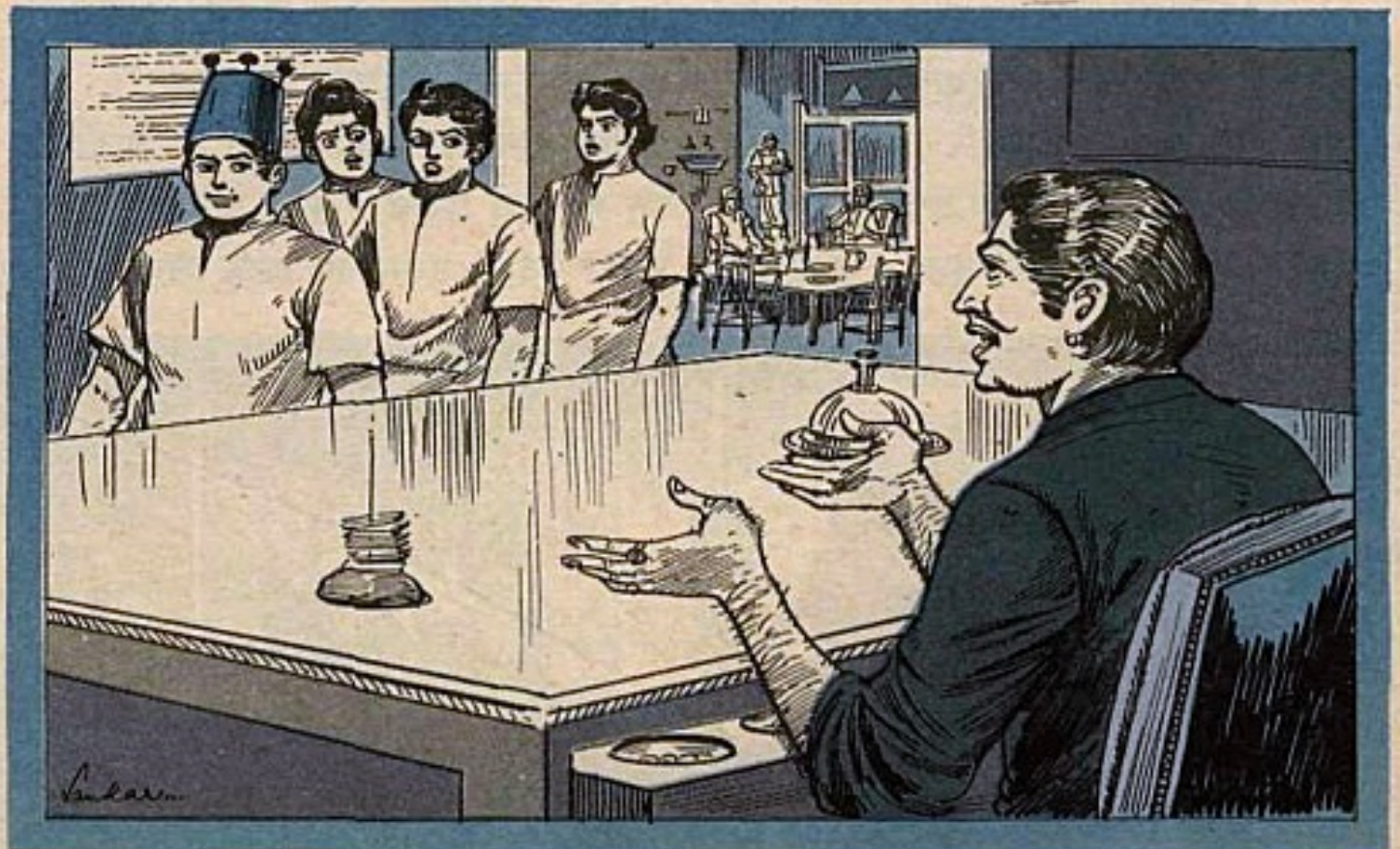
टोपी ज़रूर महिमा की है। वे उस गरीब को सताने लगे कि तुम मुँहमाँगा धन लेकर उसे हमारे हाथ बेच दो।

"अरे, मैं इसको बेच दूं? मेरा आगे का क्या हाल होगा?" गरीब ने पूछा।

"अरे भाई, हमारे पास जो कुछ धन है, सब दे देंगे, इसे हमें बेच दो।" तीनों ने गरीब के हाथ पकड़कर गिड़गिड़ाते पूछा।

आखिर गरीब आदमी उन पर रहम दिखाते हुए बोला-"तुम लोग अच्छे आदमी हो। इसीलिए यह टोपी मैं तुम्हें बेच रहा हूँ।" यह कहकर उसने उनके पास जो कुछ धन था, सब ले लिया और वहाँ से चुपचाप खिसक गया।

दूसरे दिन वे तीनों लुटेरे अपने हाथ मखमली टोपी लिये भोजनालय में गये। कसकर पेट भर खा लिया। जब वे रुपये दिये बिना लौटने लगे तब उनको रोककर सराय के मालिक ने रुपये पूछा। वे चकित हो पूछने लगे-"रुपये किसलिए देना है?" मालिक ने उनको चोर-बदमाश बताकर खूब गालियाँ दीं और भोजन का मूल्य वसूल कर भेज दिया।

तीनों चोर बाहर आये, तब सोचने लगे-"इस टोपी को हमारे साथ रखने से कोई फ़ायदा नहीं, हम में से किसी एक को इसे सर पर पहनना चाहिए। तभी इसकी महिमा प्रकट होगी।"

उस रात को उनमें से एक ने टोपी सर पर रख ली। तीनों ने दूसरी सराय में जाकर खूब खाया। जब वे भोजन का मूल्य चुकाये बिना लौट रहे थे तब सराय के मालिक ने उनको रोक दिया। उनके पास रुपये न थे। इसलिए मालिक ने उनकी मरम्मत कराकर भेज दिया।

तब उन चोरों की समझ में आया कि उन लोगों ने गरीब के साथ जो दगा किया, उसका बदला उसने इस तरह लिया।

शिथिलालय

[१५]

[शिखिमुखी और उसके अनुचर जब गगनगुफा के प्रदेश में पहुँचे, तब गोंड नाच रहे थे। नागमल्ली जिस झोंपड़ी में बन्दी थी, उसमें एक गोंड शिखिमुखी के हाथों में पकड़ा गया। शिखिमुखी ने शेर का चमड़ा ओढ़ा था। शिथिलालय के पुजारी ने उसे पहचान लिया। विक्रमकेसरी ने पिंजड़े से शेर को छोड़ दिया। बाद—]

शिथिलालय के पुजारी तथा गोंड के नेता को पता चला कि इस बार सचमुच उन पर शेर हमला करने जा रहा है। शेर ने इस बार चार-पांच लोगों को अपने पंजे से मार गिराया। वहाँ रहना ख़तरनाक समझकर शिथिलालय का पुजारी गगनगुफ़ा के बाजू में स्थित पहाड़ की ओर दौड़ने लगा। गोंडों का नेता भी अपनी गुफ़ा की ओर भागते अपने अनुचरों को आदेश देने लगा— "मूर्खो! शेर को देख भागे जा रहे हो! अलावों में जलनेवाली लकड़ियाँ लेकर उसका सामना करो!"

गोंड लोग अपने नेता के आदेशानुसार जलनेवाली लकड़ियाँ लेकर शेर की तरफ़ दौड़ पड़े। आग से न डरनेवाला कोई जंगली जानवर नहीं होता। शेर आगवाली लकड़ियों को देख डरकर पीछे घूम पड़ा।

इतने में शिथिलालय का पुजारी ज़ोर से चिल्ला पड़ा–"अरे सवरगीध! जल्दी आ जाओ तो!"

शेर के प्रवेश करते ही गगनगुफ़ा के सामने जो हलचल मची, उसकी वजह से शिखिमुखी इस बात पर ध्यान न दे सका कि पुजारी किस ओर भाग गया। गोंडों के नेता को देख वह उस ओर दौड़ा। शिखिमुखी पर ध्यान देनेवाले पुजारी ने अपने सेवक को पुकारा।

पुजारी की पुकार सुनकर सवरगीध उसके पास दौड़ते हुए बोला–"पुजारी देव! मैं यहीं पर हूँ, अभी आया!"

"हम यहाँ जिस काम के लिए आये थे, वह पूरा हो गया। अब हमें ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों के लिए रवाना होना है।" यह कहते पुजारी पहाड़ की चोटी की ओर आगे बढ़ा।

तब सवरगीध ने पूछा–"हुज़ूर! आपकी आज्ञा हो तो मैं आकाश में उड़ने को तैयार हूँ।"

"इस घने अंधेरे में ऊपर उड़ना खतरनाक है। तुमने चटाई लपेट ली? रस्सा पहाड़ की चोटी से बांध दिया?" पुजारी ने सवरगीध से पूछा।

"आपके आदेशानुसार सब कुछ तैयार रखा है। देव, क्या हम उड़कर पहाड़ की घाटी में चले?" सवरगीध ने पूछा।

"ऐसा पागलपन न करो। हाथ-पैर तोड़ बैठोगे! रस्से की मदद से मैं पहले घाटी में उतर जाता हूँ। तुम चटाई की लपेट को उठाकर मेरे पीछे धीरे से चलो।" पुजारी ने कहा।

दोनों पहाड़ की चोटी पर पहुँचे। वहाँ पर एक मज़बूत चट्टान से एक तगड़ा रस्सा बंधा हुआ था। चट्टान के बाजू में रस्सों से बंधा एक चटाई की

लपेट थी। उसमें नागमल्ली बंदी थी। उसके मुँह पर कपड़े की एक पट्टी बंधी थी।

शिथिलालय के पुजारी ने एक बार इतमीनान से नागमल्ली पर दृष्टि दौड़ायी। इसके बाद चट्टान के पास जाकर रस्से को खींचकर देखा। तदनंतर थोड़ी दूर पर खड़े सवरगीध की ओर देख पुजारी ने पूछा—"घाटी में उतरने के लिए रस्सा पर्याप्त होगा?"

"घाटी तक क्या पुजारीदेव, आप मंत्र का प्रयोग करेंगे तो वह ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार तक भी लंबा हो जायगा।" सवरगीध ने कहा।

"अरे, यह क्या बकते हो? मैंने कहा था कि आज रात को न पिओ। फिर भी तुमने ताड़ी पी ली? बकवास बंदकर चटाई की लपेट सर पर रखकर मेरे पीछे घाटी में उतर जाओ।" यह कहकर पुजारी रस्सा पकड़कर पहाड़ पर से घाटी में उतरने लगा।

सवरगीध ने हाथ उठाकर एक बार ऊपर-नीचे हिलाया, फिर बोला—"यह सब पुजारीदेव की आज्ञा!" यह कहते सवरगीध नागमल्लीवाली चटाई को कंधे

पर उठाने लगा, तब गगनगुफ़ा की ओर से बड़ा शोरगुल सुनाई पड़ा।

सवरगीध ने घबराये हुए पल-भर गगनगुफ़ा की ओर देखा, फिर पूछा—"पुजारीदेव, लगता है कि शिखिमुखी का दल गोंड नेता पर हमला कर रहा है। क्या हमें नेता की मदद नहीं करनी है?"

"अरे, उस गोंड बदमाश की मदद भी करनी है? मुँह बंदकर मेरे पीछे चलो! उस बदमाश ने मेरे एक भी आदेश का ठीक से पालन नहीं किया। उसके साथ भूतों के नेता ने दगा दिया, मैंने उन दोनों को अपने मंत्र के बल से

को घेर लिया। उस संघर्ष में दो-तीन गोंड खूब घायल हो गये। शिखिमुखी का विचार था कि जहाँ तक हो सके, बिना खूनखराबी के ही गोंडों पर अधिकार करके नागमल्ली को छुड़ा ले जावे। इसलिए उसने गोंड नेता से पूछा—"तुम अपने अनुचरों से कह दो कि वे सब अपने अपने हथियार डाल देवे। ऐसा करेंगे तो हम तुम लोगों की कोई हानि न करेंगे। मुझे केवल सवर नेता की लड़की नागमल्ली चाहिये।"

"नागमल्ली ही नहीं, शिथिलालय के पुजारी को भी हमारे हाथों में सौंपना होगा!" विक्रमकेसरी ने गोंड नेता की ओर भाला बढ़ाते हुए कहा।

गोंड नेता थर-थर कांपते हुए बोला—"इस में मेरी कोई गलती नहीं, मेरी जान बचा दो। रुपयों के लोभ में पड़कर मैं नागमल्ली को पकड़ लाया हूँ। मैं ने सुना कि उसका बाप खूब पैसेवाला है। उससे पैसे लेकर नागमल्ली को छुड़ाना चाहता था, लेकिन आखिर ऐसा हो गया!"

"आगे जो कुछ होनेवाला है, उसकी बाबत तुम खुद सोच सकते हो! पहले यह बताओ, पुजारी और भूतों के नेता

बेवकूफ़ बनाया और नागमल्ली को अपने वश में किया। अब उनको इस पहाड़ पर कूदकर मर जाने दो।" शिथिलालय के पुजारी ने गरजकर कहा।

"बेचारे, गोंड नेता अच्छे आदमी हैं! शायद उसकी मौत शिखिमुखी के हाथों में लिखी हुई है!" सवरगीध चिल्ला उठा, तब नागमल्लीवाली चटाई को पीठ पर लटकाये रस्से की मदद से घाटी में उतरने लगा।

सवरगीध की कल्पना के अनुसार गगनगुफा के सामने शिखिमुखी और उसके दल ने गोंड नेता और उसके दल

को तुमने कहाँ पर छिपा रखा!" गरजते हुए विक्रमकेसरी ने गोंड नेता की ओर दो क़दम आगे बढ़ाये।

गोंड़ नेता फिर कांप उठा। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में बाड़ी के पास भूतों का नेता रोते हुए चिल्ला रहा था—"शेर की बात सब भूल गये हैं। सरकार, मेरी मदद कीजिये, मेरी जान बचाइये। यह मेरा गला काटना चाहता है।"

भूतों के नेता की चिल्लाहट सुनकर विक्रमकेसरी दो-चार अनुचरों के साथ बाड़ी के पास दौड़ पड़ा। शेर बाड़ी से लगकर खड़ा था। भूतों का नेता घुटनों के बल बैठकर बुझने की हालत में स्थित जलती लकड़ी शेर की तरफ़ दिखा रहा था। शेर उस पर कूदने के लिए संकोच करते जबड़े फैलाकर गुर्रा रहा था।

"इस भूतों के नेता को कल सुबह शेर का आहार बना देंगे। इस वक़्त हमें इस से काम लेना है। तुम लोग दो-चार जलती लकड़ियाँ ले आओ। शेर को धीरे से फिर पिंजड़े में भेज देंगे।" विक्रमकेसरी ने कहा।

विक्रमकेसरी का आदेश सुनकर दो-चार शबर दौड़कर अलावों के पास भाग

गये और जलती लकड़ियाँ ले आये। विक्रमकेसरी ने भूतों के नेता को भागने से रोकने के लिए दो शबरों को पहरे पर रखा, तब दोनों हाथों में दो जलती लकड़ियों को लेकर शेर के निकट पहुँचा। शेर एक बार ज़ोर से दहाड़ उठा, फिर मुड़कर बाड़ी से सटकर चलने लगा। वह जब पिंजड़े के पास पहुँचा तब एक शबर ने दूसरी ओर से उसे रोक दिया। शेर पंजे फैला उस पर कूदने को तैयार हो गया, फिर डरकर पिंजड़े में जा घुसा। झट विक्रमकेसरी ने बाड़ी पर चढ़कर पिंजड़े का दर्वाजा जोर से बंद कर दिया।

विक्रमकेसरी जब भूतों के नेता के पास लौटा तब उसने देखा कि वह बाल नोचते पागल की तरह बक रहा है। विक्रमकेसरी ने शबर पहरेदार को अपने पास बुलाकर पूछा—"यह क्या बकता है? इसने भागने की कोशिश तो नहीं की?"

"हुज़ूर! मुझे लगता है कि यह पागल हो गया है। मैं ने जब इस से पूछा कि पुजारी कहाँ? यह मेरी बात पर ध्यान दिये बिना बक रहा है। 'वह उठा ले गया। वह बुरी मौत मरेगा।' यह कहते अंट-संट बकता जा रहा है।" शबर ने जवाब दिया।

विक्रमकेसरी ने भूतों के नेता का कंधा पकड़कर झकझोरते हुये पूछा—"अरे, साफ़ साफ़ बता दो, किसको उठा ले गया? कौन बुरी मौत मरेगा? नागमल्ली को तुमने कहाँ पर छिपाया?"

यह सवाल सुनकर मानो भूतों का नेता फिर होश में आया। विक्रमकेसरी की ओर एक-टक देखकर बोला—"मैं ने नागमल्ली को जिस झोंपड़ी में छिपाया, वहाँ से पुजारी उसे उठा ले गया। मैं ने शिखिमुखी को वादा किया था कि नागमल्ली को छुड़ाऊंगा। अब वह

नहीं है। शिखी मुझे शेर का खाना बनायेंगे। मेरी मौत निश्चित है।" भूतों के नेता का कंठ गदगद् हो उठा।

भूतों के नेता की बात सुनकर विक्रमकेसरी को संदेह हो गया कि शिथिलालय के पुजारी ने नागमल्ली को गगनगुफा से कहीं भेज दिया है। इसके बाद विक्रमकेसरी भूतों के नेता की गरदन पकड़कर खींचते हुए शिखिमुखी के पास ले गया। विक्रम ने शिखी को सारा समाचार सुनाया।

क्रोध में आकर शिखिमुखी ने भाला उठाया और गरजकर कहा—"ऐ भूतों के नेता, तुम्हारी मौत निश्चित है। तुम और पुजारी दोनों चोर-चोर मौसरे भाई हो। उसको हमने चारों ओर ढूंढ़ा, पर वह कहीं नहीं मिला। जल्दी यह बताओ, वह कहाँ छिपा रहता है?"

"सरकार! वह दुष्ट मेरा जानी दुश्मन है। यह बात गोंड नेता भी जानता है। आपने जिस झोंपड़ी में नागमल्ली को रखने को कहा, मैंने वहीं छिपाया। अंधेरा होने के बाद उसे और उसके सेवक को एक-दो बार पहाड़ की तरफ़ जाते देखा। कहीं वहाँ पर..." यह कहते भूतों का नेता मौन हो गया।

शिखिमुखी भूतों के नेता की गरदन पकड़कर जल्दी मचाते हुये बोला—"हूँ, जल्दी चलो, दिखाओ, वह जगह कहाँ है?"

भूतों का नेता पहाड़ी छोर की ओर जल्दी जल्दी क़दम बढ़ाने लगा। उसके पीछे शिखिमुखी, विक्रमकेसरी और शबर मशाल लिए हो लिए। मशालों की रोशनी में पहाड़ी छोर पर एक मज़बूत पत्थर से बंधा एक रस्सा दिखायी दिया। झट झुक कर शिखिमुखी ने उस रस्से को खींचकर देखा। वह ऐंठा हुआ था। फिर उसने सर झुका कर रस्से को कान से लगाकर सुना, तब कहा—'इस में ज़रा भी शक

नहीं कि रस्से की मदद से पुजारी वगैरह पहाड़ पर से घाटी में उतर रहे हैं।"

"तब तो झट रस्से को काट दीजिये। वह बदमाश घाटी में पत्थरों पर गिर कर सर फूटने से मर जायगा।" गोंड नेता उसी समय वहाँ पर पहुँचा और बोला।

"गोंड नेता! जल्दबाज़ी में आकर ऐसी बेवकूफ़ी न करो। रस्से को काटने से न केवल पुजारी ही मरेगा, बल्कि याद रखो कि उसके साथ नागमल्ली भी है।" शिखिमुखी ने कहा। शिखिमुखी की बातें सुनकर कुछ गोंडों ने अपने हाथ के मशालों को घाटी में फेंक दिया। मशालों की रोशनी में रस्से की मदद से उतरनेवाले पुजारी, सवरगीध तथा उसके कंधे पर लटकने वाली चटाई की लपेट सब को दिखाई दी।

"शिखी! अब क्या किया जाय? वह बदमाश नागमल्ली के साथ हमारी आँखों में धूल झोंक कर कहीं भाग जायगा।" विक्रमकेसरी ने कहा।

"मैं एक दूसरे रस्से की मदद से उसका पीछा करूँगा। यह रस्सा शायद चार आदमियों को ढो नहीं सकता है। गोंड नेता, तुम जल्दी एक रस्सा मंगवा दो।" शिखिमुखी बोल उठा।

कुछ ही मिनटों में गोंड एक रस्सा ले आये। शिखिमुखी ने रस्से के एक छोर को मज़बूत चट्टान से बंधवा दिया, दूसरे छोर को घाटी में खिसका कर घाटी में उतरते गोंडों से बोला—"तुम लोग मशालों को इस तरह फेंको जिससे वे पुजारी के दल को न लगे।"

गोंडों ने जो मशाल फेंके, उनकी रोशनी में शिखिमुखी ने देखा कि पुजारी और सवरगीध लगभग घाटी के निछले हिस्से तक पहुँच रहे हैं। झट शिखी रस्से के साथ घाटी में फिसलते सरकने लगा।

(और है)

दो वैद्य

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति मौन श्मशान की ओर चलने लगा । तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा :–" राजन्, मामूली आदमी तुम जैसे भूत, पिशाच और बेतालों से संगति नहीं कर सकते । अगर करते भी हैं तो समीर की तरह धोखा खा जाते हैं । श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको समीर की कहानी सुनाता हूँ, सुनो!"

बेताल यों कहने लगा : बहुत समय पहले एक गाँव में समीर नामक एक आयुर्वेदी वैद्य था । उस गाँव में एक बार नीहार नामक एक दूसरा वैद्य भी आ पहुँचा । उन दोनों में दोस्ती हो गयी । इसलिए उन दोनों ने यह निश्चय किया कि दोनों साथ मिलकर दवा-दारू करेंगे और मरीज़ों से जो कुछ धन मिलेगा, उसे बराबर बाँट लेंगे ।

वेताल कथाएँ

समीर की शादी हो गयी थी। उसकी पत्नी बड़ी सुंदर थी। समीर अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। लेकिन नीहार अविवाहित ही था। एक दिन उन वैद्यों के पास एक बीमार लड़के को लाया गया। उसकी गर्दन पर एक घाव था। शरीर पर खून के धब्बे न थे। उसकी नाड़ी कमज़ोर थी। ऐसा मालूम हुआ कि लड़के का बहुत सारा खून निकल गया है। वह पिछली रात को जब सोने गया, तब वह स्वस्थ था। लेकिन रात को उस पर क्या बीता, कोई जानता न था।

नीहार ने उस लड़के को ताक़तवर दवायें खिलायीं और उस रात को अपने घर में ही रखा। वह खुद धनुष और बाण लेकर एक कोने में छिप गया। आधी रात के समय एक भयंकर पिशाचिनी खिड़की में से लड़के के कमरे में पहुँची। नीहार ने उस पिशाच पर बाण चलाया। वह पिशाचिनी की बायीं जाँघ पर जा लगा। इस पर वह चिल्ला कर खिड़की में से भाग गयी।

नीहार को यह निश्चित रूप से मालूम हुआ कि पिछली रात को उसी पिशाचिनी ने लड़के की गर्दन पर घाव कर उसका खून चूस लिया है। दूसरे दिन सवेरे जागते ही समीर ने अपनी पत्नी की साड़ी पर खून के धब्बे देखे और पूछा—"यह सब क्या है?"

"मुँह अंधेरे पानी लाने बाहर गयी तो किसी शिकार ने मुझ पर बाण चलाया।" समीर की पत्नी ने जवाब दिया।

समीर ने अपनी पत्नी के घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँध दी और नीहार के घर जाकर लड़के का हाल पूछा। नीहार ने उसे समझाया कि रात-भर वह आराम से सो गया है और अब उसका हाल थोड़ा अच्छा है।

"इस गाँव में बड़ी विचित्र घटनाएँ घट रही हैं। मुँह अंधेरे मेरी पत्नी पानी

भरने गयी तो किसी शिकारी ने उस पर बाण चलाया। इसलिए उसकी जांघ पर गहरा घाव हो गया है।" समीर ने कहा।

"किस जांघ पर?" नीहार ने पूछा।

"बायीं जांघ पर?" समीर ने कहा।

"तुमको मैं एक अप्रिय समाचार सुनाता हूँ। यह तुम्हारी भलाई के लिए ही कहता हूँ। वह यह कि तुम्हारी पत्नी पिशाचिनी है।" नीहार ने कहा। लेकिन उसने यह नहीं बताया कि उसकी पत्नी पर तीर चलानेवाला शिकारी वही है।

समीर अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। इसलिए नीहार के मुँह से यह बात सुनते ही उसका सर चकरा गया।

"मैं यक़ीन नहीं कर सकता।" समीर चिल्ला उठा।

"मेरी बात पर तुम यक़ीन न करो। लेकिन आज रात को तुम सोने का अभिनय कर देखते रहो कि तुम्हारी पत्नी क्या करती है! असली बात अपने आप मालूम हो जायगी।" नीहार ने कहा।

नीहार के कहे मुताबिक़ समीर उस रात को चुपचाप लेटा रहा और बिना हिले-डुले यह जांच करने लगा कि उसकी पत्नी क्या करनेवाली है।

आधी रात के वक़्त समीर की पत्नी बिना कुछ आहट के बिस्तर से उठ बैठी और भयंकर पिशाचिनी के रूप में बदल कर खिड़की में से उड़ गयी। एक घंटे बाद वह लौट आयी और मामूली स्त्री बन गयी। उसके मुँह पर ख़ून पुता हुआ था।

"नीहार का कहना सत्य है। उसकी पत्नी पिशाचिनी है!" समीर सोचने लगा।

सवेरा होते ही समीर नीहार के पास गया और बोला–"मेरी पत्नी सचमुच पिशाचिनी है। उसे देखते ही मेरा दिल धड़कने लगा। अब मुझे क्या करना है?"

पड़ी मिलेगी। इससे बढ़कर कोई घोर अन्याय दूसरा न होगा। अगर नीहार यह न बताता कि उसकी पत्नी पिशाचिनी है तो वह उसके साथ बहुत समय तक सुख से गृहस्थी चलाता। नीहार के ज़रिये उसका नुक़सान ही नुक़सान हुआ, पर कोई फ़ायदा न हुआ। उसे जो धन मिलता है, उसमें नीहार भी आधा बांट लेता है, अगर वह न होता तो आज तक सारा धन उसीका हुआ होता। उसे अपनी पत्नी का समाचार भी मालूम न होता। उसकी जान का खतरा भी न होता।

रात की सारी घटना सुनाकर समीर ने नीहार से सलाह माँगी।

"मुझ से क्या पूछते हो? उसे मार डालो।" नीहार ने कहा।

"मुझ से यह न होगा। मैं यह काम नहीं कर सकता।" समीर ने कहा। उसके दिल में अब भी पत्नी के प्रति ममता थी।

"तुम से नहीं बनेगा तो मैं ही वह काम करूँगा। आज दुपहर को तुम घर से कहीं निकल जाओ।" नीहार ने समझाया।

दुपहर होने के पहले ही समीर घर से कहीं निकल गया। वह सोचने लगा कि उसके घर लौटने तक उसकी पत्नी मरी

धीरे-धीरे समीर के मन में नीहार के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गयी। वह सीधे न्यायाधिकारी के पास गया और बोला— "सरकार, नीहार मेरी पत्नी की हत्या करने के प्रयत्न में है। इसकी वजह यह है कि वह उससे प्यार करता है, लेकिन अपमानित हो गया है।" यह कहकर कुछ भटों को साथ ले वह अपना घर पहुँचा।

जब वे लोग समीर के घर पहुँचे, तभी नीहार समीर की पत्नी को मारकर बाहर आ रहा था। भटों ने उसे पकड़ लिया। समीर ने नीहार पर जो इलज़ाम लगाया था, वह सच्चा साबित हुआ।

नीहार ने समीर से कहा–"दोस्त, तुम्हारी युक्ति बड़ी अच्छी है। तुमने अपनी पिशाचिनी पत्नी से पिंड छुड़ाने के लिए मुझे साधन बनाया। अब मुझ पर इलज़ाम लगाकर दवादारू से मिलनेवाला सारा धन तुमने हड़पना चाहा। इसीलिए मेरा भी पिंड छुड़ाना चाहते हो। अच्छी बात है, तुम्हारी इच्छा की पूर्ति हो।" यह कहते नीहार ठठाकर हँस पड़ा और पिशाच का रूप धरकर आकाश में उड़ गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, समीर और नीहार ने एक दूसरे को धोखा दिया। इसमें किसने किसके साथ ज्यादा धोखा दिया? इस संदेह का समाधान जानते हुये भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"यह सच है कि दोनों ने एक दूसरे को धोखा दिया। दोनों के धोखे एक तरह के नहीं। नीहार ने समीर से कभी यह नहीं बताया कि वह पिशाच है। वे दोनों वैद्य में भागीदार हैं। जहाँ तक वैद्य का संबंध है, नीहार ने समीर को धोखा नहीं दिया। शायद वह पहले से ही जानता है कि समीर की पत्नी पिशाचिनी है। लेकिन उसने उसी वक़्त यह रहस्य प्रकट किया, जब उसे यह मालूम हुआ कि वैद्य-धर्म के मामले में पिशाचिनी उसके मरीज़ को सता रही है। लेकिन समीर ने ऐसा नहीं किया। अपनी पिशाचिनी पत्नी को मारकर उसके प्रति उपकार करनेवाले मित्र को अपने स्वार्थ के लिए बलि देने का यत्न किया। इसीलिए समीर की धोखेबाजी अक्षम्य है।"

राजा के इस तरह मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सच्ची प्रतिमा

एक बार एक राजा के पास दो शिल्पी आये। दोनों मशहूर थे। राजा ने उनकी परीक्षा लेने के ख़्याल से अपनी पुत्री की प्रतिमा एक ही शैली में तैयार करने का उन्हें आदेश दिया। राजकुमारी अपने हाथ में थाली लिये और उसमें फल रखे खड़ी हुई है। इस आकृति में उसकी मूर्तियाँ दोनों शिल्पियों ने तैयार कीं।

दोनों मूर्तियाँ देखने में एक ही प्रकार की लगती थीं। उसमें रंग ऐसे भरे थे, वास्तव में असली राजकुमारी खड़ी हुई है। उन मूर्तियों को राजसभा में देख सभासदों ने विस्मय में आकर कहा—"राजकुमारी प्रत्यक्ष खड़ी हुई है। हाथ की थाली असली सोने की लगती है। उसके फल भी असली मालूम होते हैं।" इस तरह उन मूर्तियों की तारीफ़ करके बताया कि दोनों शिल्पियों में पुरस्कार बराबर बाँटना चाहिए।

"ऐसा नहीं हो सकता। इन मूर्तियों की परीक्षा करेंगे।" राजा ने कहा।

राजा ने दोनों मूर्तियों को एक साथ रखवाया और अपने पालतू तोतों में से एक को पिंजड़े से छोड़ दिया। उसने एक मूर्ति के हाथ की थाली पर बैठकर उसके फल को खाने की कोशिश की, आख़िर लाचार हो उड़ गया।

राजा ने अपने दूसरे पालतू तोते को छोड़ दिया। उसने भी पहले तोते की तरह किया।

"वही शिल्प महान है।" सब ने कहा।

"नहीं, दूसरा शिल्प ही महान है। मैं उसी को ज्यादा पुरस्कार दूँगा।" राजा ने कहा।

सब ने चकित होकर राजा से कारण पूछा।

"पहली मूर्ति को शिल्प समझकर तोते उस पर बैठ गये। दूसरी प्रतिमा को मनुष्य समझकर उस पर नहीं बैठे। आप लोग सावधानी से जाँच कीजिये। दूसरी प्रतिमा की आँखों में जो सजीवता व चमक है, वह पहली में नहीं है इसलिए दूसरी प्रतिमा को गढ़नेवाला शिल्पी ही बड़ा है!" राजा ने निर्णय किया।

बिल्ली की शादी

सुवर्णगिरि के राजा जयचन्द्र के चंद्रावती नामक एक कन्या थी। वह बड़े लाड़-प्यार में पली। लेकिन उसकी बुद्धि का ठीक से विकास नहीं हुआ। ज्यों ज्यों वह बड़ी होती गयी, त्यों त्यों उसकी सुंदरता निखर गयी।

समय काटने के लिए चन्द्रावती ने एक बिल्ली को पाला। वह भी लाड़-प्यार में पल कर चन्द्रावती के साथ बड़ी हो गयी।

चन्द्रावती के सौंदर्य को देख मुग्ध हो कई देशों के राजकुमार उस से विवाह करने के लिए संदेश भेजने लगे। उनमें पद्मपुरी का युवराज जयंत ही जयचन्द्र को पसंद आया। क्यों कि जयंत सुंदर और बुद्धिमान था। अलावा इसके पद्मपुरी का राज्य बहुत ही मशहूर था।

जयचन्द्र ने जब अपनी पुत्री के विवाह का प्रसंग छेड़ा तब उसने हठ किया कि पहले उसकी बिल्ली की शादी करनी है।

"यह भी कोई बड़ी बात है? तुम्हारी शादी पक्की हो जायगी तो बिल्ली की शादी मिनटों में होगी।" राजा ने कहा।

अपरिपक्व बुद्धिवाली चन्द्रावती ने कहा–"मेरी बिल्ली की शादी भी योग्य बिलाव के साथ ही होनी चाहिये। ऐसे बिलाव को जो आदमी लायगा, वही मेरा पति होगा।" राजा ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह मानी नहीं।

जयचन्द्र अपनी पुत्री को डांट नहीं सका। इसलिए मंत्री को सारी बातें समझाकर पूछा–"अब यह उलझन कैसे सुलझायी जाय?"

"राजकुमारी को खुश करने लायक़ कोई नाटक रचकर हम अपनी इच्छा की पूर्ति करेंगे।" मंत्री ने उपाय बताया।

सुरेश वर्मा

"वह उपाय तुम्हीं सोचो, मेरा दिमाग काम नहीं करता।" राजा ने कहा।

दूसरे दिन मंत्री ने राजधानी में ढिंढोरा पिटवा दिया और उसी दिन उसने जयंत के नाम एक भट के द्वारा पद्मपुरी में निमंत्रण-पत्र भेजा।

"राजकुमारी की पालतू बिल्ली के योग्य बिलाव को लानेवाले के साथ राजकुमारी चन्द्रावती देवी विवाह करेगी।" यह ढिंढोरा पिटवाया गया। उस ढिंढोरे को सुनकर चन्द्रावती बहुत प्रसन्न हुई।

राजधानी के युवक और प्रसन्न हुए। बिलाव लेकर कई युवक राजमहल के पास हाज़िर हुए। मंत्री ने एक एक युवक को अपने पास बुलाकर यों समझाया :–

"बेटा, इसमें एक पेचीदेदार बात है। पहले ही मैं तुमको समझा देता हूँ। कान खोलकर सुनो। तुम्हारा बिलाव राजकुमारी की बिल्ली के लायक़ है कि नहीं, इसका निर्णय राजकुमारी, रानी और राजा ये तीनों करेंगे। इनमें से कोई भी अगर तुम्हारे बिलाव का चुनाव न करेंगे तो तुम्हारा सर कटवाकर क़िले के दर्वाज़े पर लटकवाने की जिम्मेदारी मुझ पर है। इसलिए खूब सोच-समझकर तब आगे बढ़ो।"
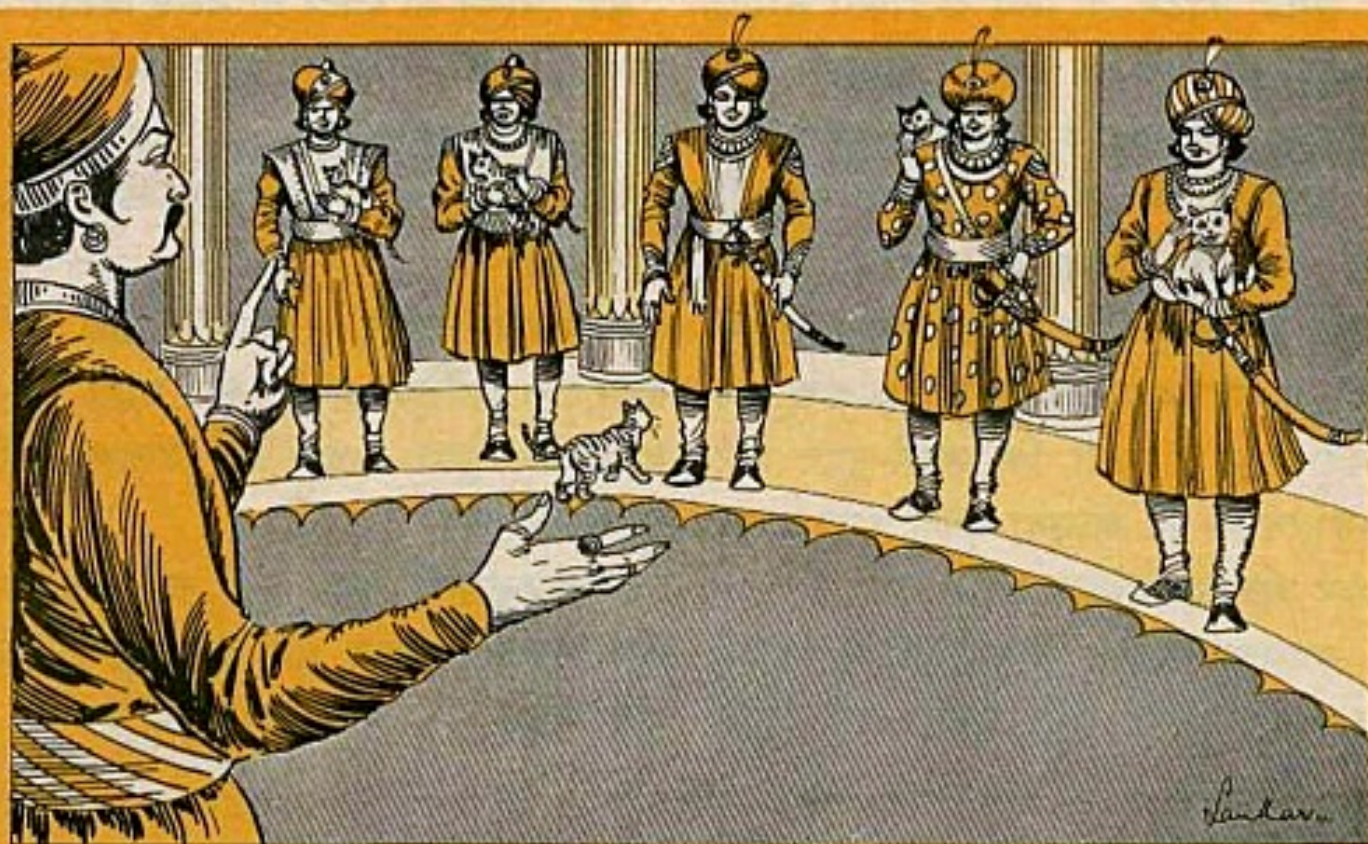
यह बात सुनकर एक एक करके सब वापस लौट गये। राजकुमारी के साथ विवाह करने का लोभ मन में पैदा होने के कारण वे सब अपने आपको कोसने लगे।

अपनी बिल्ली के लिए लायक़ बिलाव को न लाते देख राजकुमारी चन्द्रावती परेशान हो गयी।

"जल्दबाज़ी न करो, बेटी! तुम्हारी बिल्ली कोई मामूली बिल्ली थोड़े ही है? उसके लायक़ बिलाव का मिलना बहुत मुश्किल है। लेकिन जरूर मिलेगा। देखती रहो।" मंत्री ने समझाया।

एक सप्ताह के अन्दर जयंत पद्मपुरी से आ पहुँचा। इस बीच मंत्री ने एक सुन्दर बिलाव का प्रबंध कर रखा था। उस बिलाव को थोड़ा मक्खन और मलाई खिलायी और उसके शरीर पर थोड़ा मक्खन मलवा दिया। जयंत के हाथ बिलाव देकर उसे समझाया कि वह उसे अपने साथ ले आवे, फिर मंत्री जयंत के साथ राजमहल में आ पहुँचा।

राजकुमारी ने अपनी बिल्ली को उस बिलाव के सामने छोड़ दिया। वह बिल्ली बिलाव के शरीर को सूँघ कर चाटने लगी। चन्द्रावती परमानंद में आकर तालियाँ बजाते चिल्ला उठी—"यही मेरी बिल्ली के योग्य है!"

"इस बिलाव को लानेवाले युवक यही जयंत है।" मंत्री ने राजकुमारी चन्द्रावती को ज़यंत का परिचय कराया।

"यह युवक सचमुच मेरे योग्य है।" राजकुमारी मन में सोचने लगी। जब राजा ने राजकुमारी से पूछा कि क्या तुम जयंत के साथ शादी करोगी, तब चन्द्रावती ने उत्साह में आकर सर हिलाया।

मंत्री की युक्ति से चन्द्रावती और राजा जयचन्द्र की भी इच्छा की पूर्ति हुई। तब जयंत और चन्द्रावती का विवाह बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ।

भविष्य वाणी

एक गाँव में अनंत ओझा नामक एक वैद्य था। वह वैद्य में प्रवीण तो न था, उसकी ख्याति का कारण यह है कि वह गर्भवती नारियों की जाँच करके यह बात सही सही बता देता था कि उनके लड़का होनेवाला है या लड़की।

अनंत ओझा की ख्याति ज्यों ज्यों बढ़ने लगी, त्यों त्यों सैकड़ों की संख्या में गर्भवती स्त्रियाँ आकर उससे नाड़ी की परीक्षा करवातीं और अपने होनेवाले शिशु का समाचार पहले ही जानकर चली जातीं। कौन नारी किस दिन ओझा को देखने आती और उससे उसने क्या क्या बताया, ये सारी बातें वैद्य एक बही में तारीख सहित लिखकर रखता। अनंत ओझा का यह कोई नियम न था कि प्रत्येक नारी को इतनी रक़म देनी चाहिये। लेकिन जो भी नारी उसके पास आती, वह खाली हाथ न आती, बल्कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ थोड़ी-बहुत भेंट दे जाती। गरीब नारियाँ भी कम से कम तरकारी या फल सौंप देतीं। ओझा के कहे अनुसार बच्चे पैदा होने पर नामकरण के दिन उसे अपने घर बुलातीं, नये वस्त्र देकर उसका सम्मान करतीं; धनी नारियाँ पुरस्कार भी देतीं।

कुछ समय बाद अफ़वाह पैदा हुई कि अनंत ओझा की भविष्यवाणी गलत साबित हो रही है। इस अफ़वाह को सुनकर कोई अनंत ओझा से पूछता कि आपकी वाणी गलत साबित हुई है तो वह अपनी बही निकालकर उन्हें दिखाता और यह साबित कर देता कि उनकी शंका गलत है।

कुछ वर्ष बीत गये। अनंत ओझा की पत्नी ने गर्भधारण किया। उसके बहुत समय से संतान न थी। इसलिए उसें बड़ी खुशी हुई। "हमारे भी एक संतान

होनेवाली है। मेरी नाड़ी देखकर बताओ कि हमारा लड़का होनेवाला है या लड़की?" ओझा की पत्नी ने उससे पूछा।

"अरी, छोड़ दो इन बातों को? कोई भी संतान हो, ख़ुश रहो कि हमारे भी संतान होनेवाली है।" अनंत ने समझाया।

"यह तुम क्या कहते हो? जो भी स्त्री यहाँ आती है, उसके होनेवाली संतान की तुमने पहले ही भविष्यवाणी दी, हमारे होनेवाली संतान की भविष्यवाणी न बताओगे?" पत्नी ने कहा।

अनंत ओझा ने अपनी पत्नी की नाड़ी की जाँच की, लेकिन वह कुछ बता नहीं सका, बल्कि मौन रहा। "क्या सोच रहे हो? जल्दी बता दो?" पत्नी ने पूछा।

"क्या बताऊँ? बता दूँ तो हमारा ही अपमान होगा! तुम्हारे गर्भ से लड़की पैदा होनेवाली है!" अनंत ओझा ने कहा। वह जानता था कि उसकी पत्नी की दृष्टि में लड़की पैदा होना बदक़िस्मती है। क्यों कि वह किसी नारी से यह बताता कि तुम्हारे लड़की होनेवाली है, तब उसकी पत्नी नाक-भौं सिकोड़ती थी।

अनंत ओझा की पत्नी को दूसरों से यह कहना अपमान की बात थी कि उसके

लड़की होनेवाली है। इसलिए कोई औरत उससे पूछती कि तुम्हारे कौन संतान होनेवाली है? वह यही जवाब देती–"मैं क्या जानूं? मैंने अभी तक अपनी नाड़ी की परीक्षा नहीं करायी।"

नौ महीने गर्भधारण के बाद अनंत ओझा की पत्नी ने एक सुंदर बच्चे का जन्म दिया। अनंत का कलेजा धक् धक् करने लगा। अगर उसकी पत्नी पूछेगी तो वह क्या जवाब देगा?

एक दिन उसने अनंत से पूछा भी–"तुम सब स्त्रियों के होनेवाली संतान का सही विवरण बता देते हो, लेकिन मेरी नाड़ी देखते ही तुम्हारे होश-हवाश गुम हो गये, क्या बात है?"

अनंत का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कहा–"क्या तुम समझती हो कि मैं औरतों की नाड़ी देख कौन संतान होनेवाली है, सही सही बता सकता हूँ?"

"नहीं तो तुमको ऐसी ख्याति कैसे मिली? सब कहते हैं कि तुम्हारे कहे मुताबिक़ हुआ है।" पत्नी ने पूछा।

"मैंने दगा दिया है। लोग मूर्ख हैं। मेरे पास जो भी नारी आयी, मैंने उससे मुँह में जो आया, लड़की या लड़का, कह दिया। उनके जाते ही मैंने अपनी बही में उनके नाम और मैंने जो कुछ कहा, उसके उल्टे लिख दिया। मैंने जैसा कहा, अगर वह सच निकला, तो कोई बात ही नहीं, अगर गलत निकला और वे लोग आकर मुझ से पूछते तो मैं अपनी बही खोलकर दिखा देता था। वे सोचते कि मैंने सही बताया है, पर उनको ठीक से याद न रहा। इससे मेरी ख्याति और बढ़ती गयी। प्रजा की मूर्खता नहीं तो, क्या पैदा होनेवाली संतान बच्चा है या बच्ची, यह बता सकने वाला वैद्य इस दुनियाँ-भर में कोई है?" अनंत ओझा ने अपनी पत्नी को समझाया

परोपकारी पन्नालाल

एक गाँव में एक गृहस्थ था। उसके कई लड़के थे। उनमें बड़ा लड़का पन्नालाल था। पन्नालाल आलसी और कायर था। बाक़ी लड़के अपने पिता के काम में मदद देते थे। पर पन्नालाल कोई काम-वाम करता न था। आखिर उसके पिता को उसकी कामचोरी पर गुस्सा आया। उसने एक दिन पन्नालाल को डांटा—"देखने में बैल जैसे हो, खाते तो ख़ूब हो, मगर काम नहीं करते तो खाना कैसे मिलेगा?"

पिता की डांट-फटकार सुनकर पन्नालाल का स्वाभिमान जाग उठा। वह अपने कंधे पर एक पुराना कंबल डालकर घर से चल पड़ा। जिधर पैर घसीट कर ले गये, उधर बढ़ता गया। अंधेरा फैलने लगा। तब उसने अपने को एक भयंकर जंगल में पाया। उसे वह रात जंगल में बितानी पड़ी। वह सोने का ख्याल करके इधर-उधर देखने लगा। उसे एक बड़े वृक्ष में विशाल खोखला दिखाई दिया। पन्नालाल उस खोखले में पहुँचा और कंबल ओढ़कर सो गया।

आधी रात के समय कोई आहट पाकर उसकी आँखें खुलीं। उसने धीरे से अपने मुँह पर से कंबल हटाया और बाहर झांककर देखा। वह जिस पेड़ पर लेटा था, उसके सामने दो चोर दिये की रोशनी में चुराये गये गहने बांट रहे थे।

एक चोर ने हीरे की माला उठाकर कहा—"यह माला एक के हिस्से में होगी और बाक़ी सब गहने दूसरे के हिस्से में। जानते हो, इस माला की चोरी करने में मुझे कैसे अपनी सारी होशियारी दिखानी पड़ी। राजकुमारी सो रही थी मैंने माला निकाली कि वह जागी तक नहीं। हमारी

गोरख प्रसाद

खुश क़िस्मत समझो, वरना जान चली जाती।"

चोरों की बातचीत से पन्नालाल ने समझ लिया कि चोरों ने उन गहनों को राजमहल से चुराया है।

पन्नालाल चकित हो उन गहनों और चोरों को देख ही रहा था कि उसे छींक आयी। वह रोक न सका और दो बार छींक पड़ा। चोरों ने डर के मारे कांपते हुए पेड़ की ओर देखा। उस पर उनको एक काला कंबल दिखायी दिया।

"बाप रे, बाप! यह तो भालू है, भालू।" यह चिल्लाते गहनों की गठरी को वहीं छोड़ वे दोनों भाग खड़े हुए। पन्नालाल खोखले से उतर आया। उन गहनों की गठरी बांधी और सोचने लगा—"बेचारे राजा इन गहनों की चोरी होने से कैसे दुखी होंगे! उनको ये गहने लौटाने से वे कैसे खुश होंगे!" यह सोचकर पन्नालाल गहनों की गठरी के साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर सवेरा हो गया। चलते चलते वह राजमहल के पास पहुँचा। वहाँ पर द्वारपाल को देख पूछा—"मैं राजा के दर्शन करना चाहता हूँ!"

द्वारपाल ने पन्नालाल की ओर एड़ी से चोटी तक देखा और पूछा—"बताओ तो, राजा से तुम्हारा क्या काम है?"

"राजमहल में जो चोरी हो गयी, वे गहने ले आया हूँ। मैं राजा को सौंपना चाहता हूँ।" पन्नालाल ने कहा।

द्वारपाल ने जल्द एक दूसरे भट को बुलाकर अपनी जगह खड़ा किया और पन्नालाल को अपने साथ घर ले गया। उसने पन्नालाल से कहा—"राजा शिकार खेलने गये हैं। तुम खा-पीकर आराम करो। राजा के लौटने पर मैं तुमको उनके पास ले जाऊँगा।"

भोले पन्नालाल ने उसकी बात पर यकीन किया। उसने जो खाना खिलाया, उसमें नशीली चीज़ें मिलायी गयी थीं, इसलिए खाते ही वह बेहोश हो गया। द्वारपाल ने गहनों की गठरी छिपा दी, पन्नालाल को एक निर्जन प्रदेश में पहुँचाकर फिर वह अपने काम पर चला गया।

सूरज डूब रहा था। तब पन्नालाल जाग पड़ा। वह धीरे से उठा। चलते-चलते एक बूढ़ी की झोंपड़ी के पास पहुँचा। उसे बड़ी प्यास लगी थी। बूढ़ी ने उसे पानी पिलाया, तब उसकी सारी कहानी सुनकर कहा–"तुम बड़े अच्छे लड़के हो! तुम्हारे पिता से डांट-डपट क्यों खाते हो? मेरे घर पर रह जाओ, बेटा! मैं तुमको अपना पोता समझूंगी।"

रात को जब द्वारपाल घर पहुँचा, तब तक उसकी पत्नी ने गहनों की गठरी खोल दी, गहनों को देख वह बहुत खुश हुई। हीरों की माला निकालकर पहन ली। द्वारपाल ने अपनी पत्नी के गले में हीरों की माला देख कहा–"अरी, तुमने मेरा घर डुबो दिया। ये सब गहने राजमहल के हैं। उस हार को किसीने देखा तो हम दोनों की जान चली जायगी! खबरदार!"

"नहीं, नहीं, मैं घर में ही पहनूंगी। बाहर इसे कभी नहीं ले जाऊँगी!" द्वारपाल की पत्नी ने कहा।

रात-भर द्वारपाल की पत्नी उस माला को पहनी रही। दूसरे दिन नहाने जाते वक़्त उसने माला निकालकर एक जगह रख दी। थोड़ी देर बाद उसके तीन साल का लड़का एक रोटी का टुकड़ा और माला को भी हाथ में लिये बाहर आया।

इतने में कहीं से एक कौआ उड़ता हुआ आया और बालक के हाथ की रोटी के साथ माला को भी उड़ा ले गया। वह कौआ उड़कर बूढ़ी की झोंपड़ी पर आ

बैठा। पन्नालाल बाहर खड़ा हुआ था। उसने देखा कि कौए के मुंह में कोई चमकती माला लटक रही है। वह थोड़ी देर मौन रहा। जब कौआ उड़कर चला गया, तब उसके मुँह में माला न थी। पन्नालाल ने सीढ़ी लगाकर झोंपड़ी पर चढ़कर देखा। हीरों की माला वहीं पर पड़ी मिली। वह माला राजमहल की ही थी।

उस माला को लेकर पन्नालाल राजमहल के पास जा पहुँचा। कल का द्वारपाल वहीं पर खड़ा दिखायी दिया। पन्नालाल ने माला निकाली और उसे दिखाते हुए कहा—"कल तुमने कहा कि राजा शिकार खेलने गये हैं, आज तुमने राजा को गहनों की गठरी दी होगी। लेकिन उस गठरी की इस माला को तो देखो। कौआ उठा ले आया है। इसलिए यह माला अब तक राजमहल में नहीं पहुँची।

द्वारपाल चकित रह गया। दूसरे ही क्षण कोई उपाय सोचकर यह चिल्लाते कि "चोर! चोर!" उसने पन्नालाल को पकड़ लिया। राजभटों ने पन्नालाल को घेर लिया। द्वारपाल ने उन लोगों से कहा—"इसीने राजमहल में चोरी की है। लीजिये, यह हीरों की माला।"

राजभट पन्नालाल को बांध कर राजा के पास ले गये। पन्नालाल ने राजा को सारी कहानी सुनायी। राजा को द्वारपाल का दगा मालूम हुआ। राजा ने तुरंत अपने भटों को द्वारपाल के घर भेज कर उसकी तलाशी करायी। उसमें राजमहल के चोरी गये सब गहने मिल गये।

राजा ने द्वारपाल को कड़ी सज़ा सुनायी और पन्नालाल को बढ़िया पुरस्कार देकर उसे अपने दरबार में नौकरी दी। पन्नालाल को जो पुरस्कार मिला, उसे उसने बुढ़िया को दे दिया। बूढ़ी ने एक अच्छा घर लिया और पन्नालाल को ज़िंदगी-भर अपने बेटे से भी बढ़कर पालने लगी।
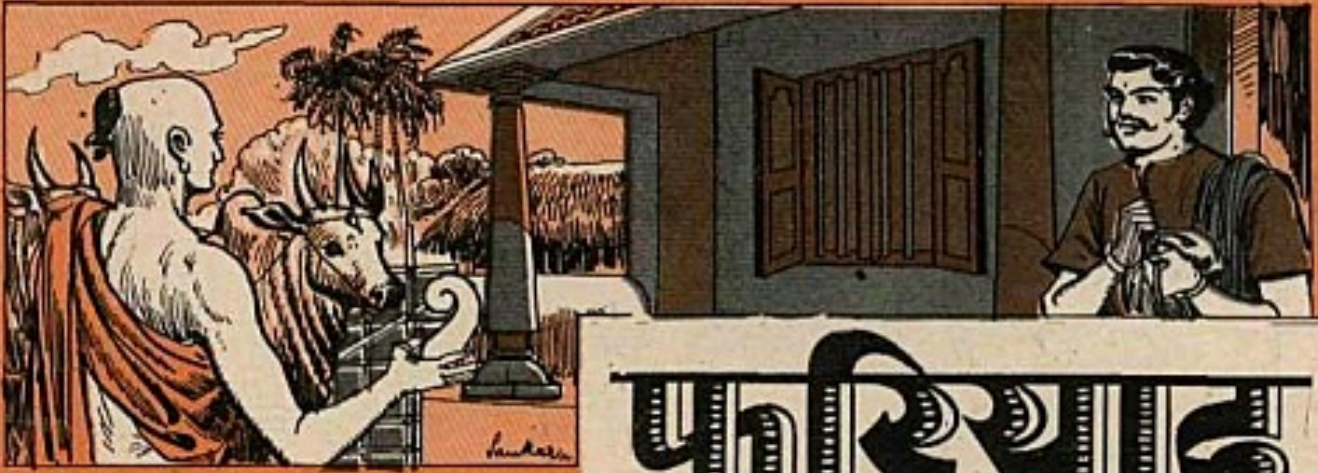
फ़रियाद

प्राचीनकाल में धर्मवर्द्धन नामक एक राजा था। वह न्याय करने में बड़ा मशहूर था। उसके राज्य के एक कोने में दण्ड़ी नामक एक ब्राह्मण था। उसके यहाँ खेत थे। एक दिन दण्ड़ी ने अपना खेत जोतने के लिए एक किसान के घर जाकर उसके बैल माँगे। खेत जोतने के बाद दण्ड़ी उन बैलों को लेकर किसान के घर पहुँचा। किसान भोजन करने जा रहा था। उसने बैलों को देखा। दण्ड़ी ने सोचा कि किसान खाने जा रहा है, इसलिए वही बैलों को अपनी जगह हाँककर, घर लौट गया।

किसान खाकर लौटा, तो बैल अपनी जगह नहीं थे। किसान घबरा गया और दण्ड़ी के घर जाकर पूछा—"क्यों जी, मेरे बैल कहाँ पर हैं?"

"मैंने उस झोंपड़ी में हाँक दिया, कहाँ गये?" आश्चर्य से दण्ड़ी ने पूछा।

"मैं यह सब नहीं जानता, मेरे बैल लौटा दो।" किसान ने हठ किया।

"मेरे बैल लौटाते तुमने देखा। क्या मैंने बैलों की चोरी की? चाहे तो मेरे घर में देखो।" दण्ड़ी ने कहा।

"यह सब मैं नहीं जानता। तुम मेरे बैल ले गये। उनको लौटाना तुम्हारा फर्ज़ है। नहीं लौटाते हो तो चलो राजा के पास! वहीं फ़ैसला होगा।" किसान ने कहा।

लाचार होकर दण्ड़ी किसान के साथ राजा के दरबार की ओर निकला।

रास्ते में एक नदी पड़ी। एक बढ़ई अपने दांतों से कुल्हाड़ी पकड़े नदी तैरते सामने आ रहा था।

"क्यों भाई, नदी गहरी है, क्या?" दण्ड़ी ने बढ़ई से पूछा।

"ओह, क्या बताऊँ? बहुत गहरी है।" बढ़ई ने जवाब दिया।

ओंप्रकाश निर्मल

बढ़ई के मुँह खोलते ही उसके मुँह से कुल्हाड़ी नदी में गिरी और डूब गयी।

"तुम्हारी वजह से मेरी कुल्हाड़ी नदी में डूब गयी। मुझे एक और कुल्हाड़ी लाकर दो।" बढ़ई ने कहा।

"अरे, इसमें मेरी क्या गलती है? तुमने ही मुँह खोलकर अपनी कुल्हाड़ी खो दी।" दण्ड़ी ने जवाब दिया।

"तुम्हारे सावाल पूछने पर ही तो मैंने मुँह खोला? मेरी कुल्हाड़ी दोगे, या राजा से फ़रियाद कर दूँ?" बढ़ई ने धमकी दी।

"हम लोग राजा के पास ही जा रहे हैं। तुम भी हमारे साथ चलो।" किसान ने बढ़ई से कहा।

तीनों मिलकर थोड़ी दूर और आगे बढ़े। उन्हें एक गड़रिया दिखाई पड़ा। पेड़ों के नीचे कुछ बकरियाँ चर रही थीं।

"अरे भाई, सामने बढ़िया घास है, मैदान है। लेकिन तुम्हारी बकरियाँ पेड़ों के नीचे ही क्यों चरती हैं?" दण्ड़ी ने गड़रिये से पूछा।

"मैं नहीं जानता। बकरियाँ तो पेड़ों के नीचे ही चरती हैं। इसकी वजह राजा ही जाने!" गड़रिये ने उत्तर दिया।

"अच्छा, मैं राजा से पूछकर कारण समझ लूंगा।" दण्डी ने कहा।

कुछ दूर और जाने पर एक बांबी के पास एक आदमी दिखाई पड़ा।

"अरे, तुम क्यों उस बांबी की ओर एकटक देखते हो? बात क्या है?" दण्डी ने उस आदमी से पूछा।

"बात कुछ नहीं, इस बांबी से थोड़ी देर पहले एक सांप बाहर आया। लेकिन भीतर जाते समय लगा कि उसे कुछ परेशानी हो रही है। एक एक इंच धीरे से सरकते वह सांप भीतर चला गया। मुझे इसका कारण मालूम नहीं होता।" उस आदमी ने कहा।

"इसका कारण भी शायद राजा ही बतावे।" दण्डी ने कहा।

इसके बाद वे सब राजा के पास पहुँचे। राजा धर्मवर्द्धन ने किसान की फ़रियाद सुनकर कहा—"तुमने देखा कि दण्डी बैलों को तुम्हारे घर तक ले आया है, फिर भी तुमने उनको बाँधने की कोशिश नहीं की। इसलिए इस अपराध में मैं तुम्हारी आँखें निकलवा देता हूँ। परंतु दण्डी ने तुमसे यह बात नहीं कही कि वह बैलों को झोंपड़ी में हाँक रहा है। इसलिए इस अपराध में उसकी जीभ कटवा देता हूँ। मंजूर है न?"

"नहीं, नहीं महाराज! मैं अपने बैलों को खुद ढूंढ़ लूँगा। मैं अपनी फ़रियाद वापस लेता हूँ।" किसान ने कहा।

इसके बाद राजा ने बढ़ई की फ़रियाद सुनी और कहा–"मुँह में कुल्हाड़ी रखे बोलना तुम्हारा अपराध है। इस अपराध के लिए मैं तुम्हारी जीभ कटवाये देता हूँ। तुम्हारे तैरते देखकर भी यह पूछना ब्राह्मण की गलती है कि क्या नदी गहरी है? इस अपराध में उसकी आँखें निकलवाये देता हूँ। मंजूर है न?"

बढ़ई ने भी डर के मारे अपनी फ़रियाद वापस ले ली। इसके बाद दण्डी ने राजा से पूछा–"महाराज! अमुक जगह पेड़ों के नीचे कुछ बकरियाँ चर रही हैं। उससे भी बढ़िया चारा चारों तरफ़ है। फिर भी उसे छोड़कर बकरियाँ पेड़ों के नीचे की घास ही क्यों चरती हैं? उनको चरानेवाला गड़रिया इसकी वजह समझ नहीं पा रहा है।"

"उन पेड़ों पर शहद के छत्ते हैं। उन पर से शहद की बूंदें टपक रही हैं। इसलिए बकरियाँ वहीं चर रही हैं। जल्द ही उन शहद के छत्तों को हटवा रहे हैं। तब बकरियाँ अच्छे चारागाह में जायेंगी।" राजा ने कहा।

"एक और विचित्र बात है, महाराज! एक बांबी में एक साँप है। वह बांबी से बड़ी तेज़ी के साथ बाहर आता है। लेकिन लौटते वक़्त परेशान रहता है। इसकी वजह क्या है?" दण्डी ने पूछा।

"वह भूख लगने पर बाहर आता है। पेट के फूलने तक खाता है। इसलिए बांबी में लौटती बार उसे तक़लीफ़ होती है।" राजा ने समझाया। इस पर दण्डी, किसान और बढ़ई भी राजा की बुद्धि की चातुरी की प्रशंसा करते उससे आज्ञा लेकर अपने-अपने घर लौट गये।

अनबूझ पहेली

एक गाँव में एक अमीर था। वह बड़ा कंजूस और मक्खीचूस था। उसके घर और बाहर भी काफ़ी काम पड़ा था। कम से कम दो आदमी दिन-भर मेहनत करे तब भी पूरा न हो पाता था। लेकिन वह अमीर घर का सारा काम अपनी बेटी से करवा देता था। बाहर का काम करने किसी एक नौकर को नियुक्त करता था, लेकिन उससे कसकर बेगारी लेता था। उसे मेहनताना ठीक से नहीं देता था। महीने के पूरा होते ही अगर नौकर वेतन माँगता तो वह यही जवाब देता–"अरे, खाना तो देता हूँ। तनख्वाह की क्या जल्दी है? मैं थोड़े ही खा जाता हूँ? जब तुम यह घर छोड़कर जाओगे, तब एक साथ ले जाना।"

उस अमीर के घर कोई नौकर टिकता न था। कुछ लोग उस बेगारी से घबराकर भाग जाते। कुछ लोग दो-तीन महीने की तनख्वाह लेकर चले जाते।

समय बीतता गया। एक दिन भोलाराम नामक एक जवान अमीर के घर काम पर लग गया। बड़े बोझीले काम भी आसानी से कर बैठता था। उसके माता-पिता, भाई-बहन कोई न थे। उसकी शादी भी न हुई थी। पहले ही दिन उसका काम देख अमीर बहुत खुश हुआ।

"अरे भोलाराम! तुम्हारे कोई नहीं है, इसलिए मेरे ही घर रह जाओ। तुमको खाना-कपड़ा देकर माहवार दस रुपये दूंगा, समझे!" अमीर ने पूछा।

भोलाराम ने अमीर की बात मान ली। उसने महीना-भर काम करके अपना वेतन माँगा। उस वक़्त अमीर गाँव के बुजर्गों से बात कर रहा था। उसने कहा– "अरे बुद्धूराम! तनख्वाह माँगने का

जगदीश प्रसाद

कोई वक़्त नहीं होता? मान लो कि अभी वेतन दे देता हूँ तो तुम क्या करोगे? तुम अपनी शादी के होने तक वेतन के रुपये मेरे पास ही रख लो। उस वक़्त एक साथ बड़ी रक़म लोगे तो किसी काम आवे!" अमीर नें यह बात बुजुर्गों से भी कही तो उन लोगों ने भी उसकी हाँ में हाँ मिला दी।

भोलाराम ने सोचा कि बुजुर्गों के सामने मालिक ने वादा किया, इसलिए उसका पालन करेगा। यह सोचकर वह मौन रह गया। कुछ दिन बाद भोलाराम को मालूम हुआ कि उस घर में वही एक नौकर नहीं है, बल्कि मालिक अपनी बेटी गिरिजा से भी खूब बेगारी लेता है। उसे पल-भर भी आराम नहीं मिलता। अगर उसकी शादी कर दे तो उसका काम करने दो नौकरों को रखना पड़ेगा, इसी कुविचार से मालिक ने अपनी बेटी की शादी करने का प्रयत्न नहीं किया।

भोलाराम को जब भी थोड़ी फ़ुरसत मिलती, गिरिजा के काम में हाथ बंटाते हुए उसके प्रेम का पात्र बना। गिरिजा की बुरी हालत देख भोलाराम रहम खाता तो भोलाराम की तक़लीफ़ों को देख गिरिजा दया करती। यह दया धीरे धीरे प्यार में बदल गयी।

"देखो, राम! तुम्हारी तनख्वाह के रुपये मेरे पिताजी के पास जमा होते जा रहे हैं। बहुत समय बीत गया तो उन रुपयों को पाना तुम्हारे लिए मुश्किल होगा। मेरे पिताजी जान देने को तैयार हो जायेंगे, लेकिन रुपये देने को नहीं। हम दोनों को इन तकलीफ़ों से तभी छुटकारा मिलेगा, जब हमारी शादी होगी। मेरे छुटकारा पाने के कोई आसरे तो नहीं दीखते, लेकिन कम से कम तुम शादी करने का बहाना करके मेरे पिताजी से तनख्वाह के रुपये लेकर इस घर से निकल जाओ।" गिरिजा ने समझाया।

"मैंने तो कोई संबंध भी नहीं देखा, मैं कैसे बताऊँ कि अमुक युवती से शादी करनेवाला हूँ?" भोलाराम ने पूछा।

"ये सब मेरे पिताजी से बताने की क्या ज़रूरत है? रुपये लेकर निकल जाओ तो कोई भी लड़की तुमसे शादी करने को तैयार हो जायगी। तुममें किस बात की कमी है?" गिरिजा ने समझाया।

"ऐसी बात है! अच्छा, मैं मालिक से पूछकर देखता हूँ!" भोलाराम ने कहा।

एक दिन भोलाराम ने मालिक से पूछा– "मालिक! मेरे यहाँ आये दस महीने बीत गये। मेरी शादी तै हो गयी है। मेरी

तनख्वाह के रुपये दिलाइये। ठीक गिनकर सौ रुपये ही न दीजियेगा! मंगलसूत्र और शहनाई के खर्च के लिए भी थोड़े रुपये और मिलाकर दीजियेगा।"

मालिक को मन ही मन इस बात का दुख होने लगा कि बैल की तरह काम करनेवाला नौकर हाथ से निकलता जा रहा है, लेकिन प्रकट रूप में मुस्कुराते हुए बोला—"अरे, तुमने हमारी भी आँख बचाकर शादी तै कर ली, जरा ठहर जाओ। रुपये दे देता हूँ?"

इसके बाद मालिक ने रुपयों की थैली निकाली। गिनगिनकर रुपये चटाई पर रखते हुए पूछा—"अरे, दुलहिन कौन है? दुलहिन को देखा कब?"

"रोज दुलहिन को देखता हूँ। दुलहिन आपकी कन्या है।" भोलाराम ने कहा।

मालिक क्षण भर के लिए चकित रह गया। फिर अपनी लड़की की ओर देखकर पूछा—"क्यों बेटी, तुमने भोला राम से शादी करने की स्वीकृति दे दी?"

"मैंने तो नहीं दी, लेकिन अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं उन से शादी करूँगी।" गिरिजा ने कहा।

मालिक के चेहरे पर धीरे धीरे दमक खिल उठी। वह अपने रुपयों को फिर थैली में भरते हुए बोला—"मुझे एतराज किसलिये? अभी पुजारी को बुलवाकर लग्न रखवाता हूँ।"

दूसरे ही महीने में भोलाराम और गिरिजा की शादी हुई। घर का नौकर अब बिना वेतन-भत्ते का दामाद बन गया। तब भी गिरिजा घर का सारा काम करती है और भोलाराम बाहर का काम देखता है। फिर अब उनकी जिंदगी में निराशा और दुख नहीं, दोनों ख़ुशी का अनुभव करने लगे।

दावत

श्यामलापुर से रामवर जानेवाले रास्ते पर कई अग्रहार पड़ते हैं जिनमें ब्राह्मण अधिक रहते हैं। उनमें कृष्णगिरि नामक अग्रहार में रामशर्मा नामक एक गरीब ब्राह्मण रहा करता था।

एक दिन की संध्या को रामशर्मा ने एक खुश खबरी सुनी कि दूसरे दिन दुपहर को श्यामलपुर का ज़मीन्दार ब्राह्मणों को बड़ा भोज दे रहा है।

रामशर्मा दूसरे दिन प्रातःकाल ही उठा। कालकृत्यों से निवृत्त होकर सोचने लगा–"दान देना हो तो श्यामलापुर के जमीन्दार ही दे। उनकी बराबरी करनेवाला दस कोस की दूरी में ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा।" यह सोचते रामशर्मा श्यामलापुर के लिए रवाना हुआ। दो कोस चलने पर लक्ष्मणपुरी आया। वहाँ पर कुछ ब्राह्मण सामने आते हुए दिखाई पड़े।

रामशर्मा ने उन लोगों से कहा–"अरे भाइयो, श्यामलापुर के जमींदार के घर बड़ा भोज दिया जा रहा है। तुम सब उल्टे क्यों जाते हो?"

"अरे भाई, तुम नहीं जानते? रामवर के जमीन्दार के घर उनकी पुत्री का विवाह हो रहा है। वहाँ पर भोज ही क्या, खूब दक्षिणा भी मिलेगी। चलो, तो हमारे साथ!" उन ब्राह्मणों ने रामशर्मा से कहा।

रामशर्मा थोड़ी देर तक असमंजस में पड़कर सोचता रहा, फिर उनके साथ चल दिया। इस बार वह पश्चिम की ओर एक कोस और चला। वहाँ पहुँचते ही ब्राह्मणों की एक भीड़ दिखायी दी।

"तुम सब लोग दक्षिणा लेने रामवर क्यों नहीं जाते, भैया!" रामशर्मा ने पूछा।

"अरे दक्षिणा की बात कहते हो! श्यामलापुर का जमीन्दार जैसे जी खोलकर

सुशीला सरन

दक्षिणा देता है, वैसा रामवर का जमीन्दार नहीं देता। भोज की बात मत पूछो! सुनते हैं कि गाड़ियाँ भरकर कटहल मंगाये गये हैं। रामवर जमीन्दार की दक्षिणा श्यामलापुर के जमीन्दार के यहाँ की कटहल की तरकारी के बराबर नहीं!" यह कहते ब्राह्मणों की भीड़ पूरब की ओर रवाना हुई।

"अरे, मैंने लौटकर बड़ी भूल की। दुपहर होने जा रही है। अब तक श्यामलापुर पहुँच जाता। मुझे दक्षिणा जी खोलकर देगा ही कौन? बढ़िया भोजन भी खो बैठा।" सोचकर रामशर्मा श्यामलापुर की ओर रवाना हुआ। एक घंटा और बीता। तब उसने देखा कि ब्राह्मण सब डकार लेते दावत की तारीफ़ करते चले आ रहे हैं। उन लोगों ने रामशर्मा को देख पूछा–"भाई, कहाँ जाते हो? श्यामलापुर की दावत खतम हो गयी। वाह, क्या बतावे, कैसी कटहल की तरकारी थी! कैसी खीर! बढ़िया भोज था! ऐसा भोज तो हमने अपनी जिंदगी-भर नहीं खाया।"

रामशर्मा का सर चकरा गया। उसने निश्चय किया, अब जल्दी जल्दी रामवर पहुँच जाना चाहिये। इसलिए लौट पड़ा।

जब रामशर्मा अपना गाँव लौटा, तब तक ब्राह्मण सब दावत खाकर लौट चुके थे। उन लोगों ने रामशर्मा को देख पूछा– "अरे भाई, लगता है, तुम श्यामलापुर हो आये हो! लेकिन क्या बतावे कि रामवर में कैसी बढ़िया दावत थी! खाते ही बनता है। वह बड़ा जमीन्दार तो नहीं, लेकिन दानी अव्वल दर्जे का है।"

"दावत अभी चल रही है, क्या?" रामशर्मा ने घबराये हुये पूछा।

"हमारी आखिरी पंक्ति थी।" ब्राह्मणों ने कहा। रामशर्मा की असली बात प्रकट हो गयी। गाँववालों ने कहा–"रामशर्मा, न घर का रहा, न घाट का।"

अनोखी सूझ

मलेयदेश में मलक्का राज्य पर सुलतान मुजफरशाह राज्य करता था। मुजफरशाह के जमाने में मलक्का राज्य की काफ़ी तरक्की हुई। वह राज्य संपन्न था। राजधानी नगर सुन्दर था। इसे देख श्याम के देशवासियों के मन में ईर्ष्या पैदा हो गयी। ज़मीन के रास्ते से श्याम के देशवासी मलक्का पर हमला नहीं कर सकते थे। क्योंकि बीच में भयंकर जंगल पड़ते थे। श्याम की सेनाएँ अगर उस जंगल से होकर यात्रा करतीं तो उसका एक भी सैनिक वापस नहीं लौट सकता था।

इसलिए श्याम के सैनिकों ने जंगी जहाजों के जरिये मलक्का पर हमला किया। मलक्कादेश के साथ अनेक देशों का व्यापार होता था। इसलिए विदेशों से आनेवाले व्यापारियों ने अपनी नावों पर यात्रा करते देखा कि श्याम के जंगी जहाज़ मलक्का के पूर्वी तट को घेरकर पश्चिमी तट की ओर आ रहे हैं। यह समाचार व्यापारियों ने मलक्का के राजा को दिया और उसे सचेत कर दिया।

जंगी जहाज पूर्वी तट को पारकर धीरे से चलते रहें, इसलिए मुजफरशाह को युद्ध की तैयारी करने का काफ़ी मौक़ा मिला। ज्यों ही श्याम की सेनाएँ मलया के तट पर पहुँचीं, त्यों ही मलक्का की फौज़ से मार खाकर वापस लौट गयीं। जल्दी भागने के लिए उन लोगों ने अपनी सारी युद्ध-सामग्री समुद्र में फेंक दी।

हारकर भी श्याम के सैनिक चुप नहीं रहें। इस तरह कई बार उन लोगों ने मलक्का पर हमला किया, लेकिन हर बार वे मुँह की खाते रहें। आखिर उन लोगों ने अपनी योजना बदल दी। इस बार वे रात के समय मलया के पूर्वी

विमलकुमार

तट को पारकर सवेरे तक सिंगपूर पहुँचे और पश्चिम तट पर आ गये ।

तब तक हमले का समाचार मलक्का के राजा को मालूम न था । मलक्का का राजा घबड़ा गया । भारी पैमाने पर सेना तैयार करने का वक्त न था । रात के पहले पहर तक दुश्मन के जहाज़ राज्य की सीमा पर पहुँच जायेंगे । इसलिए राजा ने तुरंत अपने प्रधान मंत्री बेंदहार और सेनापति विजधीरज को बुला भेजा और उनसे सलाह-मशविरा किया ।

सेनापति ने तत्काल अपने छोटे पुत्र को आदेश दिया—"तुम छोटी नाव पर किनारे-किनारे चलो और इस बात का पता लगाओ कि दुश्मन के जंगी जहाज़ कितने हैं ।" नाव पर वह युवक दुश्मन के जहाज़ों के बीच गया और उनके जहाज़ों को गिनकर वह सही-सलामत लौट आया । उसे किसी ने नहीं पकड़ा ।

श्यामदेश के जहाज़ों की संख्या अधिक थी । उतने जहाज़ों को रात ही रात तैयार करना संभव नहीं, क्या किया जाय? यही सेनापति की चिंता थी ।

"बाक़ी काम मैं देख लूँगा ।" प्रधान मंत्री ने कहा । वह सेनापति को साथ लेकर अपनी नौका में बटूपहाट नामक तट पर पहुँचा । उस तट पर समुद्र से सटकर लाखों "मांग्रोव" वृक्ष थे ।

"इन सभी वृक्षों पर एक मील तक मशाल बंधवा देंगे ।" प्रधान मंत्री ने कहा ।

प्रधान मंत्री के कहे अनुसार किया गया । उस रात को श्याम के सैनिकों ने उस तट पर पहुँचते हुए लाखों मशालों और जहाज़ों के प्रतिबिंबों को देखा । उनके कलेजे कांप उठे । उन लोगों ने सोचा कि वे सब जहाज़ ही हैं । इसलिए वे युद्ध करना छोड़कर तुरंत अपने देश की ओर लौट गये ।

योग्य वर!

प्रभाकर नगर के राजा की अधेड़ उम्र में एक पुत्री पैदा हुई। उसका नाम प्रियंवदा है। उसके विवाह के योग्य होते होते राजा बूढ़ा हो गया। राजा को यह चिंता सताने लगी कि कहीं उसकी पुत्री की शादी देखे बिना ही उसकी मृत्यु हो जाय तो कैसे।

"बेटी, तुम्हारी शादी की मुझे बड़ी चिंता है। जल्दी ही कर देना चाहता हूँ।" राजा ने प्रियंवदा से कहा।

"बात तो अच्छी है, परंतु मैं किससे शादी करूँ?" राजकुमारी ने पूछा।

"जो तुम से शादी करेगा, वह पहले तुमको पसंद आना चाहिये और वह मेरे राज्य का शासन न्याय-पूर्वक करनेवाला भी होना चाहिये। इसलिए वह हम दोनों को भी पसंद आना चाहिये, समझी! इसके लिए हम एक उपाय करेंगे। तुम्हारे पसंद के योग्य राजकुमारों को बुलाकर उनकी परीक्षा लेंगे। उसमें जो उत्तीर्ण होगा, वह तुमको और मुझे भी पसंद आवेगा। तुम इसके लिए राजी हो?" राजा ने पूछा।

प्रियंवदा ने राजा की बात मान ली। उसने तीन राजकुमारों को चुना। उनमें जो योग्य निकलेगा, वह अपने पिता के सिंहासन पर बैठ सकता है। इस शर्त के अनुसार उनमें कोई एक राजगद्दी का वारिस बन सकता है।

राजा ने उन तीनों राजकुमारों को निमंत्रण पत्र भेजकर उनको बुला भेजा। तीनों रूप-गुणों में राजकुमारी प्रियंवदा के योग्य हैं और बुद्धि कुशलता और प्रिय भाषण में भी एक दूसरे से कम नहीं।

"राजकुमारो, मैं ने अपनी बेटी प्रियंवदा के स्वयंवर के निमित्त तुम तीनों के पास

नरेश खन्ना

"इस में हीरे, मोती, मानिक, गोमेधिक, प्रवाल, नील आदि अमूल्य रत्न हैं। इन रत्नों को जड़ाकर मैं राजकुमारी के लिए एक सुंदर किरीट और रत्नों का हार बनवा दूँगा।"

अयोध्या का राजकुमार शूरजित वर्मा एक बंदूक़ ले आया।

"यह विलायत से आयी है। इससे बढ़कर कोई मारण आयुध दूसरा नहीं है। इसके सामने तीर, भाले, परशु, गदा आदि किसी काम के नहीं, यह आयुध हमें सारी दुनिया जीत कर देगा।" शूरजीतवर्मा ने बंदूक़ का वर्णन किया।

निमंत्रण भेजे। तुम तीनों में वह किसको चुनेगी, यह निर्णय करने के पहले, तुम तीनों यहाँ से रवाना होकर एक महीने के अन्दर उसके योग्य उपहार लेते आओ। आज पूर्णिमा का दिन है। अगली पूर्णिमा तक तुम तीनों लौट आओ।" राजा ने उन राजकुमारों से कहा।

तीनों राजकुमार उसी दिन रवाना हुये।

एक महीना पूरा हुआ। पूर्णिमा का दिन आया।

रत्नपुरी का राजकुमार रत्नकेतु एक चमड़े की थैली भरकर अमूल्य रत्न ले आया और राजा के हाथ में देते हुये बोला—

तीसरा राजकुमार सुवृत देश का था। उसका नाम गुणनिधि था। वह खाली हाथ लौट आया।

राजा ने जब उस पर दृष्टि डाली तब उसने कहा—"महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। मैं कोई भी उपहार नहीं ला सका। उसके बारे में सोचने का भी मुझे मौक़ा नहीं मिला। कल रात को जब मैंने चन्द्रमा को देखा, तब तक मुझे पूर्णिमा के निकट आने का ख्याल ही न रहा।"

"ऐसा कौन ज़रूरी काम था जिसमें तुम फँस गये थे? क्या हुआ राजकुमार? सविस्तार बतला दो?" राजा ने पूछा।

"मैं जिस दिन यहाँ से रवाना हुआ, उसके दूसरे ही दिन मुझे पीड़ितों की एक भीड़ दिखाई पड़ी। उसमें औरतों और बच्चों की संख्या अधिक थी। उनके आर्तनाद सुनकर मैंने उन लोगों से पूछा– "क्या हुआ है?" मुझे बताया गया कि उनके नगर पर पिंडारियों ने हमला किया और अनेक पुरुषों को मार डाला। कुछ पुरुष जो बचे थे, वे हिम्मत खोकर भाग खड़े हुए। हमलेवरों ने उनके घरों को लूटा। मैंने उन सब को हिम्मत बांधकर उनको नगर में पहुँचा दिया। रास्ते में कई गाँवों के लोग हथियार लेकर हम में आ मिले। हम सब ने मिलकर लुटेरों के साथ घंटों घोर लड़ाई की। प्रायः सब लोग जान हथेली पर लेकर भाग गये। उस गाँव को पहले की हालत में लाने में बहुत समय लगा। जो घर ध्वस्त किये गये थे, उनको फिर से बनाना पड़ा। मरे हुए लोगों की अंत्येष्टि क्रियायें करनी पड़ीं। इस परेशानी में राजकुमारी के लिए उपहार लाने की बात मैं बिलकुल भूल ही गया।" गुणनिधि ने कहा।

राजा की आँखों में खुशी से आनंद बाष्प निकले। उसने अपनी बेटी का हाथ गुणनिधि के हाथ में रखते हुए कहा–"बेटा, तुम जैसा व्यक्ति इस राज्य का राजा बन जाय तो मेरा राज्य कुछ पीढ़ियों तक खुशहाल रह सकता है। तुम जैसा व्यक्ति नारी के मोह में पड़कर जनता के सुख-दुखों को भूल नहीं सकता। ऐसे राजकुमार की ही खोज में था। आज हमारे भाग्य से तुम मिल गये। तुम दोनों का विवाह शीघ्र करवा देता हूँ।"

प्रियंवदा ने वरमाला लाकर गुणनिधि के कण्ठ में पहनाया। उसी दिन उन दोनों का विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ।

नास्तिक का सपना

एक गांव में एक नास्तिक था। वह बीमार पड़ा और उसके बचने की आशा जाती रही। उसके रिश्तेदारों ने पुरोहित को बुला भेजा। समय पर पुरोहित आ पहुँचा।

"पुरोहितजी, यह सच है कि मैं मरने जा रहा हूँ। लेकिन मुझे स्वर्ग और नरक पर विश्वास नहीं है। इसलिए कृपया मेरी अंत्येष्ठि क्रियाएँ न करें। मुझे निश्चितता के साथ मरने दीजिये।" नास्तिक ने कहा।

"तुम सीधे नरक में चले जाओगे।" पुरोहित नास्तिक को शाप देकर चला गया।

लेकिन नास्तिक मरा नहीं। उसकी बीमारी अपने आप धीरे धीरे ठीक हो गयी।

एक बार पुरोहित उस नास्तिक को देखने आया और बोला—"तुम मृत्यु के मुंह से बाहर निकल गये।"

"जी नहीं, मैं मर गया था। यमराज के दूत मुझे यम के पास ले गये। यमराज ने मुझसे पूछा—"क्या तुम्हारी अंत्येष्ठि क्रियाएँ नहीं हुई?" मैंने कहा—"जी नहीं, अब जरूरत हो तो कृपया पुरोहितजी को बुलवाकर करवा दीजिये।" इस पर उन्होंने कहा—"ऐसा नहीं हो सकता। पुरोहितों को जलनेवाले तेल की हाँडियों में पका रहे हैं। तुम भूलोक जाकर कुछ दिन और रहकर आ जाओ! इसलिए मैं चला आया।" नास्तिक ने जवाब दिया।

नैमिशारण्य में ऋषियों के गण थे। उन ऋषियों का कुलपति महामुनि शौनक था। उसने एक बार बारह वर्ष तक सत्र यज्ञ किया था। अनेक महाऋषि मिलकर जब यह यज्ञ कर रहे थे तब वहाँ पर रोमहर्ष का पुत्र उग्रश्रवसु नामक सूत आया। सूत समस्त पुराणों का ज्ञाता था।

सूत को देखते ही सभी मुनि आनंदित हो उठे और उसे घेरकर बोले–"आप कहाँ से पधार रहे हैं? आपका आगमन हमारे लिए बहुत हो आनंददायक है। आपके मुँह से हम अनेक पुण्यकथाएँ सुन सकते हैं।"

सूत ने उन मुनियों से कहा–"महामुनियो, परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया था। उस समय वैशंपायन ने जनमेजय को महाभारत की कथाएँ सुनायी थीं। उन कथाओं के लेखक वैशंपायन के गुरु वेदव्यास हैं। मैंने वे सब कथाएँ सुनीं। अनेक तीर्थों का सेवन किया। इसके बाद कौरव एवं पांडवों की युद्धभूमि शमंतपंचक नामक पुण्य तीर्थ में गया। वहाँ से लौटते हुए आप सबको देखने के विचार से यहाँ आया।"

और क्या था? व्यास महर्षि कृत महाभारत की कथाओं को सुनाने के लिए मुनियों ने सूत से अनुरोध किया।

सूत ने उन मुनियों से यों कहा–"जानते हैं, महाभारत की रचना कैसे हुई? कृष्ण द्वैपायन नामधारी व्यास ने

१. परीक्षित का शाप

"वत्स! विघ्नेश्वर की प्रार्थना करके उससे तुम अपने महाभारत नामक इतिहास लिखाओ।" ब्रह्मा ने सलाह दी।

व्यास के ध्यान करते ही विघ्नेश्वर उपस्थित हुए। व्यास की इच्छा के अनुरूप वे बोलते जाते थे और विघ्नेश्वर भी लिखते गये। इस प्रकार महाभारत की रचना समाप्त हुई। उसका प्रचार देवलोक में नारद ने, पितृलोक में देवल नामक असित ने तथा गंधर्व आदि लोकों में शुक ने किया। जनमेजय ने जब सर्पयाग किया तब वैशंपायन ने उसका पठन कर भूलोक में उसका प्रचार किया। शौनक आदि मुनि यह समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन लोगों ने सूत से पूछा—"कौरव और पांडवों ने जिस क्षेत्र में युद्ध किया, उसे शमंतपंचक नाम कैसे पड़ा?"

सूत ने उसके उत्तर में यों कहा:

त्रेतायुग और द्वापर युग के संधिकाल में राजा धर्म मार्ग से च्युत हो गये, तब परशुराम ने उनको इक्कीस बार ढूंढ़ ढूंढ़कर वध किया और उनके खून से पाँच कुंड बनाकर, उन कुण्डों में अपने पितृदेवताओं के लिए तर्पण किया। पितृदेवताओं ने परशुराम को वर दिया कि वे पाँचों कुण्ड

वेदों को चार भागों में विभक्त करने के बाद हिमालयों में जाकर बड़ी तपस्या की। उन्होंने धृतराष्ट्र की पीढ़ी के लोगों की मृत्यु के बाद महाभारत पर विचार किया। वे यह सोच ही रहे थे कि उस ग्रन्थ को सारे जगत के लिए पठनीय बनाने का मार्ग क्या है? तब उनको देखने ब्रह्मा आ पहुँचे। व्यास ने ब्रह्मा को प्रणाम कर पूछा—"भगवन्! मैंने वेद और वेदांगों के सार को निछोड़कर महाभारत नामक इतिहास की रचना की। परंतु जनता उसे पढ़कर आनंद पाने के उपयुक्त उसे लिखनेवाला कोई नहीं दीखता।"

पुण्यतीर्थ बन जायेंगे। उसी प्रदेश में भयंकर महाभारत युद्ध हुआ। इस से शमंतपंचक क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र हो गया।

परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने उस कुरुक्षेत्र में अपने छोटे भाई श्रुतसेन, उग्रसेन, और भीमसेन की मदद से महान सत्रयाग किया। उस वक़्त सरम नामक देवता-शुनक का पुत्र सारमेय यज्ञवाटिका में घूम रहा था, तब जनमेजय के भाइयों ने उस शुनक को पीटा। उसने जाकर अपनी माता सरम से यह बात कही। सरम ने इस पर क्रोधित होकर कहा–"दरिद्र और साधुजनों की कोई हानि करता है तो वह बेकार नहीं जाता।"

जनमेजय यह सोचकर डर गया कि सरम के वचन शाप बन जायेंगे और उसके लिए शांतिकर्म कराने के विचार से एक पुरोहित को ढूंढने वह हस्तिनापुर पहुँचा। एक बार जब वह जंगल में शिकार खेल रहा था तब उसे श्रुतश्रव नामक मुनि का आश्रम दिखायी पड़ा। श्रुतश्रव का सोमश्रव नामक एक पुत्र था। इसलिए जनमेजय ने श्रुतश्रव से पूछा–"क्या आप अपने पुत्र को मेरे पुरोहित बना सकते हैं?"

इस पर श्रुतश्रव ने उत्तर दिया था–"मेरे पुत्र का एक नियम है। कोई भी ब्राह्मण उससे जो भी पूछेगा, वह दे देगा। उसके इस नियम के भंग न होने की आप रक्षा कर सकेंगे तो आप उसको अपना पुरोहित बना सकते हैं।" जनमेजय ने श्रुतश्रव की शर्त को स्वीकार किया। और सोमश्रव को हस्तिनापुर ले जाकर उसकी मदद से कई यज्ञ किये।

एक दिन जनमेजय के पास उदंक नामक एक महर्षि ने आकर पूछा–"राजन! आप अपने कर्तव्य को भूलकर क्यों बैठे हुए हैं?"

"महात्मन! मैं समस्त क्षत्रिय-धर्मों का पालन कर रहा हूँ। मैंने किस धर्म की उपेक्षा की?" जनमेजय ने उदंक से पूछा।

"सर्पयाग कीजिये! दुष्ट तक्षक को राख बना दीजिये। क्या आप नहीं जानते कि आपके पिता परीक्षित को काटकर मारनेवाला वही तक्षक है? आपके पिता के प्राणों की रक्षा करने के लिए आनेवाले काश्यप को मार्ग मध्य में रोककर, उसे अपार धन का लोभ दिखाकर वापस नहीं भेजा?" उदंक ने समझाया।

वास्तव में उदंक भी तक्षक का शत्रु था। उसका कारण यों हैं; उदंक ने वेद

नामक ऋषि के पास अध्ययन किया। शिक्षा समाप्तकर गृहस्थाश्रय में प्रवेश करते समय अपने गुरु से पूछा कि गुरुदक्षिणा के रूप में क्या दूं। इसके उत्तर में वेद ने कहा—"मेरी पत्नी से पूछो, वह क्या चाहती है?" तब उदंक ने गुरु-पत्नी से पूछा—"आप क्या चाहती हैं?"

"आज से चौथा दिन मैं पुण्यकव्रत करने जा रही हूँ। उस वक्त कर्णकुण्डल पहनने की मेरी इच्छा है। मैं जिस प्रकार के कुण्डल चाहती हूँ, वे पौष्य नामक राजा की पत्नी के पास हैं। हो सके तो उनको मुझे ला दो।" गुरु-पत्नी ने कहा।

उदंक ने पौष्य राजा की पत्नी के पास जाकर यह समाचार सुनाया। रानी कुण्डल देने को तैयार हो गयी। लेकिन उसने चेतावनी दी कि तक्षक उन कुण्डलों को चुराने ताक में बैठा हुआ है।

उदंक उन कुण्डलों को ले कर अरण्यमार्ग से होते हुए जाने लगा। रास्ते में एक जगह उसे तालाब दिखायी दिया। उदंक कुण्डलों को एक स्थान पर रखकर कुल्ला करने गया, तब उसके पीछे चलनेवाला तक्षक मौक़ा पाकर कुण्डलों को लेकर भाग गया। नग्न मानव रूप में स्थित तक्षक का पीछा

कर उदंक ने उसे पकड़ लिया। झट तक्षक सांप का रूप धरकर एक बिल में घुस पड़ा।

उदंक उस बिल को लाठी से चौड़ा बनाकर उस रास्ते से पाताल पहुँचा। वहाँ के नागों से उदंक ने प्रार्थना की, पर कोई फ़ायदा न रहा। आखिर उसे एक घुड़ सवार दिखायी दिया। वह घोड़ा अग्नि था और उस पर सवार हुआ व्यक्ति इंद्र था। उदंक यह बात जानता न था। फिर भी उस घुड़ सवार ने जब उदंक से पूछा कि तुमको क्या चाहिये? तब उदंक ने कहा–"नाग लोक मेरे अधीन कर दीजिये।" तुरंत घोड़े से आग की लपटें निकलीं। इस डर से तक्षक ने कुण्डल लाकर उदंक को दिया कि उसके न देने से सारा नागलोक जलकर भस्म हो जायगा। उदंक ने उन कुण्डलों को ले जाकर गुरु-पत्नी को दिया।

उदंक के द्वारा जनमेजय को जब यह समाचार मालूम हुआ कि उसके पिता को तक्षक ने ही मार डाला है। तब जनमेजय ने अपने मंत्रियों से पूछा–"मेरे पिता को तक्षक ने क्यों मारा?" मंत्रियों ने परीक्षित की मृत्यु का समाचार यों सुनाया: महाभारत में मृत्यु को प्राप्त अभिमन्यु के उत्तरा द्वारा एक पुत्र हुआ। वही परीक्षित है। परीक्षित ने कृपाचार्य के यहाँ अस्त्र-विद्याएँ सीखीं, तदनंतर राज्य का शासन करने लगा। शिकार खेलना उसे बड़ा प्रिय था। एक दिन शिकार खेलते-खेलते परीक्षित एक जानवार के पीछे भागने लगा जो उस से चोट खाकर भाग गया था। परीक्षित उसका पीछा करते उस जगह पहुँचा, जहाँ शमीक नामक महामुनि तपस्या कर रहा था। शमीक से परीक्षित ने पूछा–"मेरे बाण से घायल होकर एक जानवर इस ओर दौड़ा आया है। वह किस तरफ़ भाग गया?"

तपस्या में लीन शमीक ने कोई जवाब नहीं दिया। इस पर परीक्षित क्रोध में आया और वहीं पर मरे पड़े एक सांप को अपने बाण की नोक से उठाकर शमीक के गले में डाल परीक्षित चला गया। शमीक के पुत्र श्रृंगी को यह समाचार मालूम हुआ। क्रोधी श्रृंगी ने शाप दिया– "आज से सातवें दिन परीक्षित तक्षक के विष से मर जायगा!"

शमीक को जब यह मालूम हुआ कि उसके पुत्र ने परीक्षित जैसे उत्तम राजा को भयंकर शाप दिया है तब बहुत दुखी हो उसने गौरमुख नामक अपने शिस्य को बुलाकर कहा–"तुम अभी परीक्षित के पास जाकर उनको सूचित करो कि वे तक्षक से बचने का कोई इंतज़ाम करे।" गौरमुख ने परीक्षित के पास जाकर यह समाचार सुनाया।

परीक्षित अपनी करनी पर दुखी हुआ और साथ ही श्रृंगी के शाप से डर भी गया। उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि वे कोई ऐसा उपाय बता दे जिससे वह शाप से बच सके। मंत्रियों ने एक स्तम्भवाला एक महल बनाया। उसमें बाहर से हवा भी घुस नहीं सकती थी। सारे महल में ज़हर के असर को दूर करनेवाली औषधियाँ रखवा दीं। विषवैद्य और मंत्र सिद्धों को भी बुला भेजा। राजा के साथ सभी मंत्री उस महल में पहुँचकर शासन का कार्य चलाने लगे।

छे दिन बिना खतरे के बीत गये। सातवें दिन काश्यप नामक एक ब्राह्मण राजा के शाप का समाचार सुनकर तक्षक के काटने से राजा को बचाने के ख्याल से रवाना हुआ। तक्षक भी राजा को डंसने का उपाय सोचते हुए ब्राह्मण के वेश में आ रहा था। रास्ते में काश्यप से उसकी मुलाक़ात हुई। उसने काश्यप की यात्रा का

कारण पूछा। काश्यप ने तक्षक से कहा—"मैं सांपों के विष को दूर कर सकता हूँ। अपने मंत्रों के बल से मैं सांप से मरे हुए व्यक्ति को जिला सकता हूँ। राजा को जब तक्षक काट लेगा तब मैं राजा को फिर जिला दूं तो मुझे अपार धन और यश भी मिलेगा।"

"महाशय, मैं ही तक्षक हूँ। मेरे विष से जो आदमी मरेगा, वह राख हो जायगा। तुम्हारे मंत्रों से वह फिर कभी जी न सकेगा। इसलिए तुम वापस चले जाओ।" तक्षक ने कहा।

लेकिन काश्यप ने उसकी बात नहीं मानी। तक्षक ने पास के बरगद के वृक्ष को डंसकर अपने विष की अग्नि से उसे राख कर दिया। तुरंत काश्यप ने अपने मंत्र के बल से यथा प्रकार किया।

"तुम मेरे विष के प्रभाव को दूर कर सकते हो, लेकिन मेरे शाप को नहीं। मैं राजा से भी ज्यादा धन देता हूँ, तुम वापस लौट जाओ।" तक्षक ने काश्यप को खूब धन दिया और वापस भेजा।

इसके बाद तक्षक ने कुछ नागों को मुनि कुमारों के रूप में परीक्षित के पास भेजा। वे फल और पुष्प लेकर परीक्षित के पास गये। उन लोगों ने जो फल दिये, उनमें एक फल को परीक्षित ने काटा। उस में एक छोटा सा कीड़ा दिखायी पड़ा।

परीक्षित ने अपने चारों ओर बैठे हुये लोगों से कहा—"शाप का समय समाप्त होने को है। सूर्यास्त होने जा रहा है। अगर मुझे काटेगा तो यह कीड़ा काटेगा। सर्प का अब मुझे कोई भय नहीं है।" इतने में उस कीड़े ने तक्षक का रूप धरकर परीक्षित को डंस लिया। सब लोग तितर-बितर हो गये। तक्षक के काटने से न केवल परीक्षित जलकर भस्म हुआ बल्कि एक स्तम्भवाला महल भी जलकर राख हो गया!

गुजरात प्रांत बहुत ही प्रसिद्ध है। कृष्ण की निवास-भूमि द्वारका वहीं पर है। सोमनाथ मंदिर भी वहीं पर है। ये दोनों अत्यंत प्रसिद्ध यात्रा-स्थल हैं। गुजरात के निवासियों पर बुद्ध और महावीर के उपदेशों का प्रभाव है। वल्लभाचार्य के उपदेशों और मीरा के भजनों से भी वहाँ के लोग काफ़ी प्रभावित हैं। हिन्दू धर्म के सुधारक स्वामी दयानंद भी उसी प्रदेश के हैं। पाकिस्तान के जन्मदाता जिन्ना भी गुजरात के निवासी थे।

गुजरात में कठियवाड नामक एक छोटा सा प्रदेश है। ब्रिटीशवालों के शासनकाल में, उनके अधीन कठियवाड में लगभग ३०० रियासतें थीं। उनमें पोरबंदर नामक रियासत एक है। १८ वीं शताब्दी में जूनागढ नामक रियासत से हरजीवन गांधी नामक एक वैश्य पोरबंदर में आया और १७७७ में एक मकान खरीदकर अपने पुत्रों के साथ छोटे-मोटे व्यापार करने लगा। हरजीवन के पुत्रों में उत्तमचन्द पोरबंदर के शासक राणा खीमाजी की प्रशंसा का पात्र बना और वहाँ पर दीवान नियुक्त हुआ। इस प्रकार गांधीजी का परिवार मशहूर हुआ।

शासन के कार्यों में उत्तमचन्द समर्थ था। इसलिए उसने राजनैतिक व आर्थिक दृष्टि से रियासत की उन्नति में योगदान दिया। परंतु खीमाजी का कम उम्र में ही देहांत हो गया, इसलिए राज्य के शासन का भार उसकी माता के हाथों में गया। दीवान की दक्षता और उसके स्वतंत्र विचारों से खीमाजी की माता सहमत न थी। अलावा इसके रानी की दासियों की करतूतों से राज्य का एक अफ़सर रुष्ट था। उसको उत्तमचन्द ने आश्रय दिया,

परिणाम स्वरूप वह रानी के क्रोध का कारण बना। रानी ने अपने दीवान के घर पर सैनिक दल भेजकर गोलियाँ चलवायीं। (उन गोलियों के निशान बहुत समय तक दीवान के घर पर मौजूद थे) भागयवश यह समाचार वहाँ के ब्रिटीश एजेंट को मालूम हुआ और उसने गोलियाँ चलाने से रोक दिया।

इस घटना के बाद उत्तमचन्द पोरबंदर को छोड़कर जूनागढ़ के अपने गाँव में लौट गया और वहाँ के नवाब का स्नेह प्राप्तकर दीवान नियुक्त हुआ। पोरबंदर में जब रानी के शासन का अंत हुआ और राणा विक्रमजित गद्दी पर बैठा तब १८४७ में उत्तमचन्द गांधी को फिर दीवान के पद पर काम करने के लिए बुलावा आया, किंतु उत्तमचन्द ने उस पद को अस्वीकार किया, तब वह पद उसके पुत्र करमचन्द को दिया गया।

करमचन्द पच्चीस साल की उम्र में पोरबंदर के दीवान के पद पर नियुक्त हुआ और ईमानदारी से २८ वर्ष तक काम किया। आख़िर वहाँ के शासक के क्रोध का कारण बना, तब दीवान का पद अपने भाई तुलसीदास को देकर वह राजकोट पहुँचा। राजकोट के शासक ने उसे दीवान के पद पर नियुक्त किया।

करमचन्द जब राजकोट का दीवान था, तब एक ब्रिटीश अधिकारी ने उसे गिरफ़्तार किया। इसका कारण यह है कि एक ब्रिटीश अफ़सर ने राजकोट के शासक की बेइज्जती की, इस पर करमचन्द ने उस अफ़सर को डांटा और उससे माफ़ी मांगने से इनकार किया। करमचन्द की हिम्मत को देख उसे गिरफ़्तार करनेवाला अफ़सर दंग रह गया और आख़िर उसने लाचार होकर करमचन्द को जेल से रिहा किया।

करमचन्द गांधी के चार पत्नियाँ थीं। एक पत्नी के मरने के बाद वह दूसरी शादी करता गया। उसकी चौथी पत्नी पुतलीबाई उससे २० साल छोटी थी। उसके तीन पुत्र और एक पुत्री पैदा हुई। उसके आखरी पुत्र मोहनदास गांधी थे। महात्मा गांधी नाम से विश्व विख्याति प्राप्त ये ही मोहनदास गांधी सौ साल पहले १८६९ अक्तूबर २ तारीख को पैदा हुये।

मोहनदास का जन्म पोरबंदर में तीन मंजिलवाले गांधी परिवार के भवन में हुआ। वे सात साल की उम्र तक वहीं पर अपने चचेरे भाइयों के बीच बढ़ते रहे और उसके बाद राजकोट पहुँचे। राजकोट राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा नहीं था। पोरबंदर में गांधीजी ने बालू में उंगलियों से अक्षर लिखना सीखा। लेकिन राजकोट में हाईस्कूल था।

गांधीजी की माता पुतलीबाई उस परिवार को चलाया करती थीं। उनका राजपरिवार की स्त्रियों से संबंध था और राजनैतिक विषयों पर भी उनका प्रभाव था। फिर भी वे गृहस्थी की ज़िम्मेदारी के प्रति लापरवाह नहीं थीं। उनका अधिकांश जीवन उपवास और मनौतियों

से बीतता था। बच्चे हमेशा उनको घेरे रहते थे। वे पढ़ना-लिखना बिलकुल नहीं जानती थीं। अंधविश्वास और निष्ठा उनमें कूट-कूटकर भरी थी। उनके बच्चे अछूतों को छू न सकते थे। ग्रहण लगने पर देख नहीं सकते थे। ऐसे कठिन नियमों में बच्चे पलते रहें।

मोहनदास गांधी के मन में संदेह भरा रहता था। वे सोचते थे, झाड़ू देनेवाले को छूने से क्या होगा! ग्रहण को देखने पर कैसी हानि होगी? माताजी इन प्रश्नों के कोई समाधान देतीं, पर गांधीजी के मन में शंका भरी रहती। फिर भी बड़े

होने के बाद भी उनके मन में माताजी के प्रति अपार स्नेह था। बड़े होने पर गांधीजी "नास्तिक" बन गये, तो भी माताजी की लगन और दृढ़ निश्चय पर वे मुग्ध थे। मातृप्रेम उनमें परिपक्व हो गया और वही बाद को सर्व मानव-प्रेम के रूप में परिणत हो गया। नारियों में अनादिकाल से ही दूसरों में स्पंदन शीलता पैदाकर सहानुभूति प्राप्त करना और आत्मत्याग की भावनाएँ बराबर चली आ रही हैं। इन भावों को गांधीजी ने अपनी माताजी से ही प्राप्त किया। गांधीजी ने अपनी ६२ साल की उम्र में स्वयं बताया था कि उन में अगर पवित्रता नामक कोई चीज़ है तो वह उनको माताजी से ही प्राप्त है न कि पिता से।

मोहनदास गांधीजी का जन्म उन के पिता करमचन्द की ५० साल की उम्र में हुआ था। पिताजी के प्रति गांधीजी के मन में अनुराग न था, लेकिन भक्ति और श्रद्धा ज़रूर थीं। यह भक्ति भाव अपने शिक्षकों और बड़ों के प्रति दिखाते रहें, आख़िर गांधी में आत्मविश्वास ही लुप्त हो गया। गांधी अक़लमंद नहीं थे। कभी गांधीजी को कोई पुरस्कार मिलता तो वे लजाते और सोचते कि वे इस पुरस्कार के योग्य नहीं हैं।

मोहनदास पहले से ही कायर थे, फिर भी उनकी १३ साल की उम्र में उनका विवाह किया गया। उनके बड़े भाई कर्सन दास और उनके एक चचेरे भाई के विवाह हो रहे थे। तब यह सोचा गया कि तीनों के विवाह एक साथ कर देने से ख़र्च कम पड़ेगा, इस ख़्याल से मोहनदास को भी शादी के बंधनों में बांधा गया। वधू के पिता पोरबंदर के एक व्यापारी गोकुलदास मकानजी थे। वधू का नाम कस्तूरबाई था।

८८. विशाल पत्थर का सर

मेक्सिको राष्ट्र में ट्रेस जेपोटेस के पास १९३९ में प्राप्त पत्थर के सर की ऊँचाई ६ फुट है और उसकी चारों तरफ़ की लंबाई १८ फुट तथा वज़न १० टन से ऊपर है। ई. पूर्व बसाल्ट पत्थर में इसे गढ़ा गया है। यह जहाँ प्राप्त है, उसके दस मील के क्षेत्र में ऐसे पत्थर नहीं हैं। अनुसंधान कर्ताओं का ख्याल है कि इस मूर्ति को टक्सट्ला के पहाड़ों में तैयार कर उस जगह पर लाया गया।

Photo by Ranbir S. Bakhshi
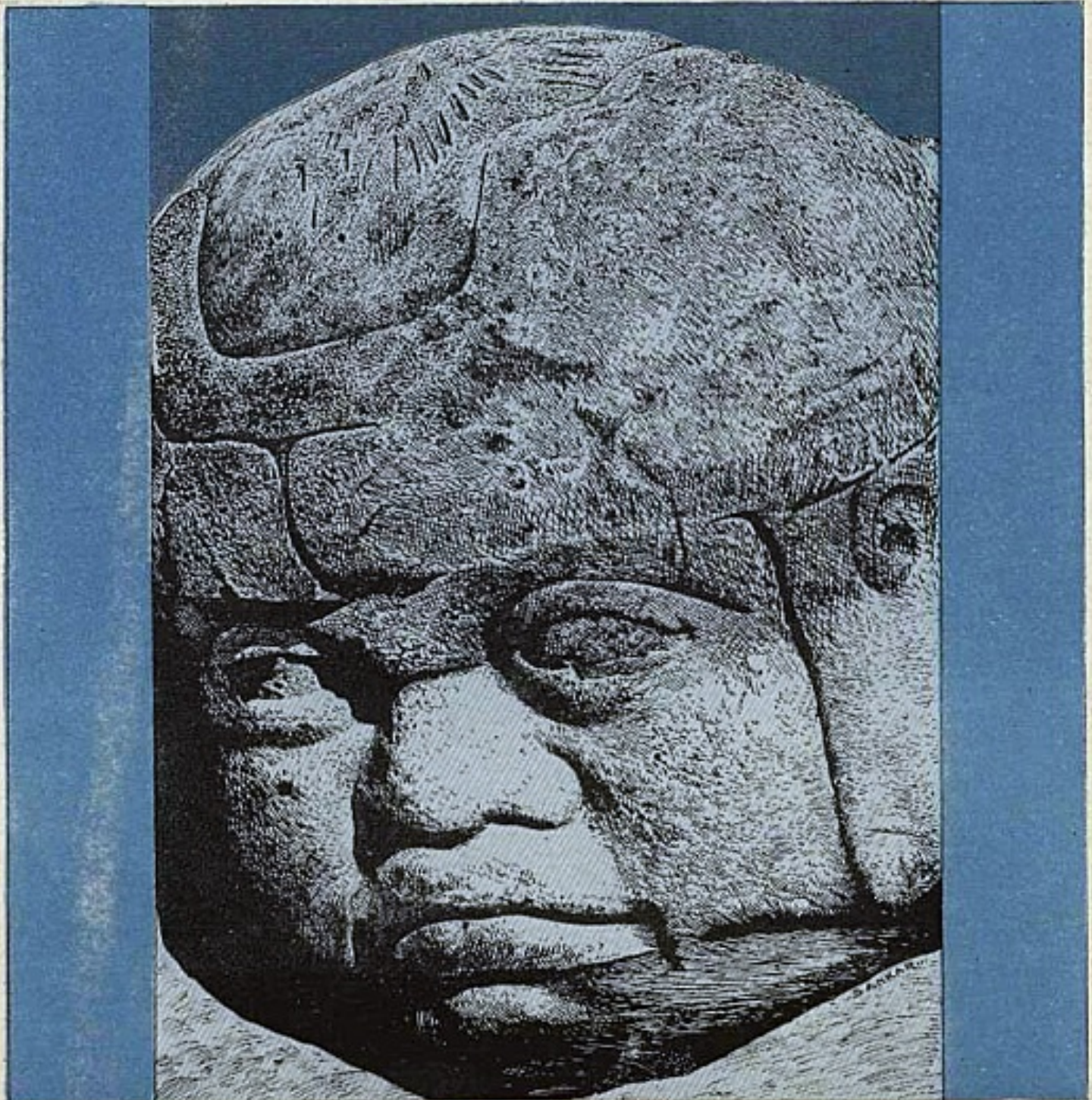
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

यह देखो कुत्ते का खेल!

प्रेषक :
सुंदरसिंह चकोर - कवराधा

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत परिचयोक्ति

आपस में कैसा मेल!

प्रेषक : सुंदरसिंह चकोर - कवराधा

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जून १९६९ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजे!

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख १० एप्रिल १९६९ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

एप्रिल – प्रतियोगिता – फल

एप्रिल के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।

इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **यह देखो कुत्ते का खेल!**

दूसरा फ़ोटो: **आपस में है कैसा मेल!**

प्रेषक: **सुंदरसिंह चकोर,**

कवराधा, दुर्ग (म. प्र.)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'